आज़ादी का अमृत महोत्सव

कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड

2020 - 2021

सागर रत्न

हिंदी गृह पत्रिका

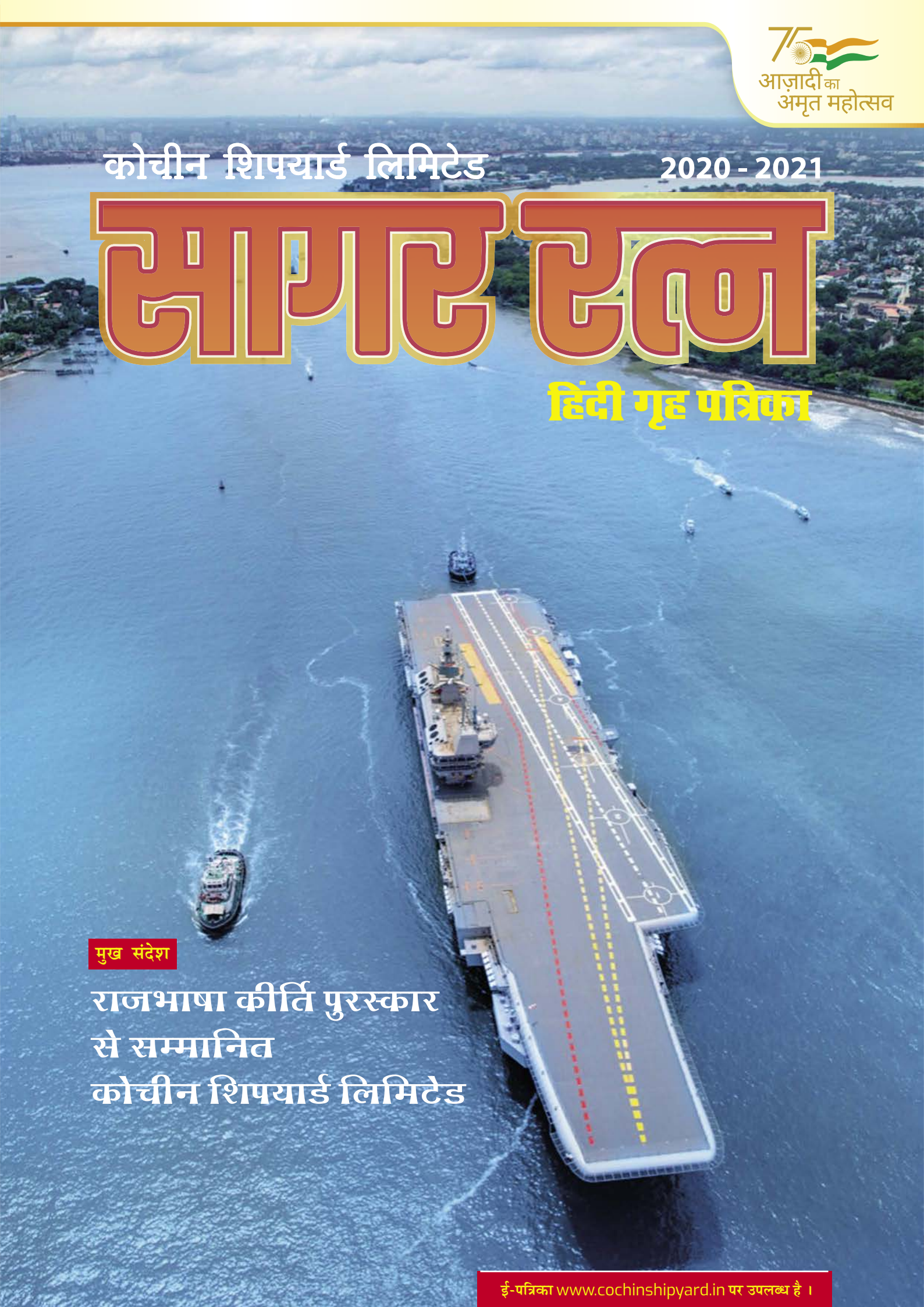

मुख संदेश

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड

ई-पत्रिका www.cochinshipyard.in पर उपलब्ध है ।

राजभाषा नीति के संवर्धन हेतु
12 प्र

प्रचार	प्रबंधन
प्रतिबद्धता	प्राइज़
प्रोत्साहन	प्रसार
प्रोन्नति	प्रेम
प्रशिक्षण	प्रयोग
प्रयास	प्रेरणा

सागर रत्न

विषयवस्तु

अध्यक्षीय भाषण 4

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार 5

लेख 6

राजभाषा संदेश 39

कंपनी समाचार 46

बोलचाल की हिंदी 50

बाल रचनाएँ 52

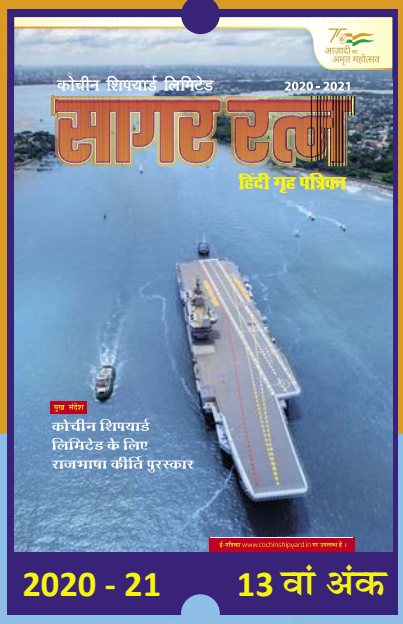

संपादक मंडल

संरक्षक

श्री मधु एस नायर
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संपादक

श्री सुबाष ए के
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

संपादक सदस्य

श्री पी एन संपत्त कुमार
सहायक महाप्रबंधक (प्रशासन)

श्रीमती सरिता जी
उप प्रबंधक (हिंदी)

श्रीमती लिजा जी एस
हिंदी अनुवादक

श्रीमती आतिरा आर एस
हिंदी टंकक

कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड
भारत सरकार का उद्यम
(एक मिनिरत्न कंपनी,पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय)

अध्यक्षीय भाषण

श्री मधु एस नायर
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

मुझे आपके सामने कोचीन शिपयार्ड की गृह पत्रिका सागर रत्न का 13 वां अंक प्रस्तुत करते हुए गर्व महसूस हो रहा है। इस अंक में विशेष रूप से कार्यालयीन हिंदी के क्षेत्र में सीएसएल की गतिविधियों और हमारे अपने कर्मचारियों और उनके परिवार के सदस्यों के रचनात्मक कार्यों को भी शामिल किया गया है।

जैसा कि आप सभी जानते हैं, पिछले कुछ वर्षों से सीएसएल महामारी कोविड़ के कारण कठिन दौर से गुज़रा है। कार्यालयीन बाधाओं से हमने सभी कर्मचारियों को टीका लगवाने और कोविड़ प्रोटोकॉल को सख्ती से बनाए रखने के बाद भी वापस सामान्य स्थिति में आने का प्रबंध किया है। मैं उन लोगों के साथ हूँ जिन्होंने इस महामारी के दौरान अपनों को खोया है।

कंपनी पूरे भारत में मुख्य भूभाग और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के केंद्र शासित प्रदेश में अपने परिचालन का विस्तार कर रही है। सब कहीं राजभाषा की प्रसांगिकता सर्वोपरि है।

मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि हम तीसरी बार राजभाषा कीर्ति पुरस्कार के लिए चुने गए हैं, जो भारत में राजभाषा कार्यान्वयन का सर्वोच्च पुरस्कार है। स्थानीय टॉलिक और अन्य अभिकरणों द्वारा भी हमारे प्रदर्शन की सराहना की गई है। मेरे हिंदी टीम को बधाई।

हमारे साथ हमारे नए पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय के मंत्री श्री सर्बानंद सोनोवाल हैं और मैं इस अवसर पर उनका स्वागत करता हूँ। मुझे उम्मीद है कि हम उनके मार्गदर्शन में अपना अच्छा काम जारी रखेंगे। सागर रत्न टीम के सभी रचनाकारों को बहुत - बहुत शुभकामनाएं...।

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार

कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड को वर्ष 2020-21 के लिए 'ग' क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के सर्वोत्तम कार्यान्वयन हेतु भारत सरकार के गृह मंत्रालय से सर्वोच्च राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। 14 सितंबर, 2021 को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर श्री मधु एस नायर, अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक, सीएसएल ने श्री निशिथ प्रामाणिक, माननीय गृह राज्य मंत्री से पुरस्कार ग्रहण किया। पूरे भारत में कोचीन शिपयार्ड ग-क्षेत्र में सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में तीसरे स्थान पर रहा, और कोचीन शिपयार्ड तीसरी बार यह पुरस्कार जीत रहा है।

क्रिसल बिनु
बिनु कुरियाकोस की सुपुत्री

सफरनामा

वटवडा की यात्रा

दिसंबर की सुबह जल्दी हमने एक यात्रा की योजना बनाई। सर्दी के ठंड की सुबह थी। सर्दियों में घूमने के लिए 'वटवडा' सबसे अच्छी जगह थी। हमने जल्द ही अपना बैग पैक किया और अपनी यात्रा शुरू की। बहुत ठंड थी इसलिए मैं सो रही थी। जब मैं उठी तो मैंने मून्नार का सबसे खूबसूरत नज़ारा देखा। मून्नार व्यू पॉइंट में बहुत सारे बंदर, कोहरे से ढ़के लोग और खूबसूरत बर्फ से ढ़के पहाड़ थे। हमने कुछ तस्वीरें लीं और अपनी यात्रा जारी रखी।

सुबह के करीब 10 बज रहे थे जब हम मदुपेट्टी डैम पहुंचे। हमने कुछ तस्वीरें लीं और यात्रा जारी रखा। इको पॉइंट बहुत ही खूबसूरत जगह था। हमने कुंडला डैम भी पार किया। जंगल के अंत में एक और दृश्य बिंदु था, दि टॉप स्टेशन। हम वटवडा के प्रवेश द्वार पर पहुँचे। यह एक सुंदर और ठंडी जगह थी। पम्माडुम शोला राष्ट्रीय उद्यान है। हम जंगल में गए और बहुत सारे बंदर, मकाक और भैंसे देखें। वटवडा का रास्ता दुर्लभ जुनून फल, स्ट्रॉबेरी और ताज़ी सब्ज़ियां बेचने वाले विक्रेताओं से भरा हुआ था।

वटवडा अपनी फसलों और पर्यटकों को आकर्षित करने वाली जलवायु के लिए प्रसिद्ध है। वटवडा का स्वागत स्ट्रॉबेरी के बागानों के साथ होता है, उसके बाद गाजर, हरी मटर, पत्ता गोभी, आलू और गन्ने के बागान देखने को मिलेंगे। हमें ताज़ी स्ट्रॉबेरी और सब्ज़ियों को तोडने की इजाज़त भी थी। स्ट्रॉबेरी का स्वाद लाजवाब था। हमने उनमें से कुछ खरीदे और वापस वटवडा की सुंदरियों के साथ।

अगला गंतव्य वटवडा व्यू पॉइंट था। पहाड़ की चोटी से, हम पूरे वटवडा को देख सकते थे। एक कप चाय पीना और वटवडा का दृश्य देखना। सूर्यास्त देखना, सुखद जलवायु, पक्षियों की आवाज़, झरनों की आवाज़। बड़ा शानदार था। झरनों की आवाज़ सुनकर मैं इसके प्रति और अधिक आकर्षित हो गयी। पानी भी ठंडा था। वन विभाग के नियमों के अनुसार हमें शाम 6 बजे से पहले वटवडा चेक पोस्ट को पार करना था और हमने कर लिया। सूरज जल्द ही अस्त हो गया और वटवडा की अविस्मरणीय यात्रा हमारे लिए एक अच्छा अनुभव था।

पिछले एक साल से इस कोरोना वायरस की महामारी के दौरान, हमारे बच्चे लॉकडाउन के कारण घर पर ही हैं। इस समय बच्चे अपने दोस्तों और अन्य रिश्तेदारों से बिलकुल मिल नहीं पाते हैं। साथ ही साथ वे अपने स्कूलों में जाकर अपने-अपने अध्यापक या अध्यापिका से बातचीत भी नहीं कर पाते हैं। सारा दिन हमारे बच्चे घर पर कैद महसूस करते होंगे।

डॉ.ज्योत्सना नायर
रमेष पी एस की सुपत्नी

सामाजिक जागरूकता

लॉकडाउन में बच्चे

इस परिस्थिति में बच्चे तनाव और अकेलापन महसूस करते हैं। महामारी के बढ़ते समाचारों से उन्हें डर और घबराहट भी हो रही होगी। बच्चे इसलिए ज़्यादा गुस्सा, चिड़चिड़ापन और दुख प्रकट कर रहे हैं। हम बड़ों को उन्हें, इस परिस्थिति में, मनोसामाजिक समर्थन देना चाहिए।

इस स्थिति में बच्चों को समय पर सोना, जागना, पौष्टिक खाना देना, टी वी एवं मोबाइल फोन देखना, व्यायाम करना आदि सब पर माता-पिता को विशेष ध्यान रखना चाहिए। हम अपने काम की वजह से बच्चों के साथ समय बिता नहीं पातें। हम बड़ों को उनका धैर्य बढ़ाना है।

हमारे बच्चों को ऑनलाइन क्लास में एकाग्रचित होकर बैठने में हमें उनका साथ देना चाहिए। उनके मनोरंजन के लिए उन्हें कोई भी उनके मनपसंद शौक का पालन करने दे। जैसे कि नृत्य, गाना, चित्रकारी, शिल्पकला, संगीतवाद्ययंत्र बजाना या कोई भी नई भाषा सीखने को हम उन्हें प्रोत्साहित कर सकते हैं।

हमारे बच्चों को यह एहसास होना चाहिए कि वे घर के अंदर कैद नहीं हैं। वे अपने-अपने घरों में सुरक्षित और भाग्यशाली हैं। हमें उनके मानसिक स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। इसके साथ बच्चों को सामाजिक दूरी और मास्क लगाकर ही इस कोरोना वायरस महामारी के जंग में जीत सकते हैं। हम उनका खोया हुआ बचपन नहीं लौटा सकते लेकिन हम उनका साथ निभा सकते हैं।

ग्रीष्मा बालू
सहायक प्रबंधक

सामाजिक जागरूकता

भारत में लैंगिक अंतर की वास्तविकता

प्रौद्योगिकी और जीवन स्तर में बहुत प्रगति के साथ इक्कीसवीं सदी में होने के बावजूद, लिंग भेदभाव एक सामाजिक मुद्दा है जिसका समाधान होना बाकी है। हम लिंग अंतर के मुद्दे को कितनी दूर करने में सक्षम हैं, यह अभी भी एक प्रश्न बना हुआ है। एक आम धारणा है कि अब लैंगिक समानता के मुद्दों पर चर्चा करने की आवश्यकता नहीं है। हालाँकि, भारत अपनी महिलाओं को समान अवसर प्रदान नहीं कर रहा है। शिक्षित होने और डिग्री की योग्यता रखने के बावजूद हमारी कई महिलाएं अपना जीवन घर तक ही सीमित रखती हैं और नौकरी के लिए नहीं जाती हैं। महिलाओं के लिए वित्तीय स्वतंत्रता हर जगह सबसे कम चर्चा का विषय है। एक शिक्षित महिला को समाज में योगदान देने के लिए बहुत कुछ मिला है। सबसे बढ़कर, आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने से उसे सामाजिक स्वीकृति और पहचान मिलेगी। क्या हमें अपनी युवा लड़कियों को अपनी आजीविका कमाने के लिए परिवार में दूसरों पर निर्भर रहने के बजाय आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के लिए प्रशिक्षित नहीं करना चाहिए? विभिन्न शोध रिपोर्टों और विभिन्न संगठनों के डेटा बैंकों के कुछ आंकड़े निश्चित रूप से हमें हमारे देश की महिलाओं की स्थिति के बारे में सोचने पर मजबूर कर देंगे।

आर्थिक सशक्तिकरण को लैंगिक न्याय की कुंजी माना जाता है। साक्षरता और शिक्षा किसी राष्ट्र द्वारा प्राप्त विकास का बुनियादी संकेतक हैं। वर्ल्ड बैंक द्वारा श्रम बल पर हाल की रिपोर्ट के अनुसार, महिलाएं भारत की कुल श्रम शक्ति का केवल 20.3% हैं। प्रत्येक 100 पुरुषों पर केवल 28 महिलाएं श्रम शक्ति में भाग लेती हैं, जहां विश्व औसत प्रति 100 पुरुषों के लिए 64 महिलाएं हैं, और यह मध्य पूर्व के बाद दुनिया में सबसे कम है। हमारे देश की पढ़ी-लिखी महिलाएं क्या कर रही हैं? वे कहां हैं? क्या उनके पास करियर और आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के सपने नहीं हैं? क्या समाज उनके बाहर आने और उनके सपनों और लक्ष्यों को आगे बढ़ाने में बाधा उत्पन्न कर रहा है?

भारत का सामाजिक मानदंड ऐसा हैं कि महिलाओं से परिवार और बच्चों की देखभाल की जिम्मेदारी लेने की अपेक्षा की जाती है। यह रूढ़िवादिता महिलाओं की श्रम शक्ति की भागीदारी में एक महत्वपूर्ण बाधा है। इससे महिलाएं काम और परिवार के लिए समय आवंटित करने को लेकर लगातार संघर्ष कर रही हैं। जीवन उनके लिए संघर्ष का युद्ध

है। सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र ऐसा है जहां तुलनात्मक रूप से महिलाओं की भागीदारी 30% से 40% तक है। हालाँकि, ऐसे उद्योगों में भी हम देख सकते हैं कि जैसे-जैसे हम संगठनात्मक पदानुक्रम की सीढ़ी चढ़ते जाते हैं, महिलाओं का अनुपात कम होता जाता है। बहुत सी महिलाएं शादी के बाद काम करना बंद कर देती हैं। वे खुद को पति और परिवार की देखभाल करने तक ही सीमित रखती हैं। क्या उन महिलाओं के सपने उनके घर की दीवारों में कैद हैं या हमने उन्हें इस तरह से पाला है कि हमने उन्हें पति और बच्चों और अपने घर की चार दीवारों से परे सपने देखना नहीं सिखाया है? हमारे समाज में अपने पति पर निर्भर एक महिला को बहुत सामान्य माना जाता है। क्या इन मानदंडों को फिर से परिभाषित करने का समय आ गया है? जब एक महिला अपने सपनों का पीछा करना चाहती है तो क्यों न पति भी परिवार की समान जिम्मेदारी लेता है कि एक महिला के विकास के लिए जगह बनाई जाए। क्या यह उचित समय नहीं है कि हमारे समाज में इस पर चर्चा हो?

यहां तक कि जब महिलाएं काम पर जाती हैं, तो वे कम आकर्षक जॉब प्रोफाइल तक ही सीमित रहती हैं, जिसमें सरल डेटा प्रविष्टि शामिल होती है और जिन्हें कृत्रिम

बुद्धिमत्ता और प्रौद्योगिकी के अन्य विकासों के साथ आसानी से बदला जा सकता है। कई महिलाएं हैं जो अपने करियर में पदोन्नति पसंद नहीं करती हैं क्योंकि वे काम और परिवार दोनों के लिए पर्याप्त समय न मिलने से डरती हैं। यहां तक कि एक ऐसे परिवार में जहां पति और पत्नी दोनों काम कर रहे हैं, हम देखते हैं कि महिलाएं ज़्यादातर घर और बच्चों की देखभाल करती हैं, जिससे उनके दैनिक समय का एक बड़ा हिस्सा निकल जाता है। कई संगठन भी विभिन्न आधारों पर महिला कर्मचारियों को पसंद नहीं करते हैं। एक पुरुष के समान शैक्षणिक योग्यता वाली महिला को कई संगठनों में अलग-अलग वेतन दिया जाता है। इसी तरह, करियर में पुरुषों की उपलब्धियों को महिलाओं की तुलना में अधिक मनाया जाता है। कुछ समय पहले तक जब कॉरपरेट कार्य मंत्रालय कंपनी बोर्ड में कम से कम एक महिला निदेशक की अनिवार्य आवश्यकता के साथ आई था, हमारी अधिकांश कंपनियों के बोर्ड में महिला भागीदारी नहीं थी।

यह स्थिति तभी बदलेगी जब परिवार के कार्य करने के तरीके में संरचनात्मक परिवर्तन होगा। जिस तरह से हम अपने बच्चों को प्रशिक्षण देते हैं वह बहुत महत्वपूर्ण है। इस देश में लड़कियों को इस तरह से लाया जाना चाहिए कि वे आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो जाएं जब वे अपने निर्णयों और अपने आस-पास की हर चीज़ के बारे में राय के साथ बड़ी हों। बालिकाओं को अपने घर में खाना पकाने और साफ-सफाई के अलावा अन्य सभी काम करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। खाना बनाना हर किसी के जीवन में एक आवश्यक कौशल है। यह लिंग विशिष्ट नहीं होना चाहिए। एक लड़की और लड़के को समान रूप से लाया जाना चाहिए। इस देश की महिलाएं मज़बूत और सक्षम हैं। वे विशेष देखभाल नहीं बल्कि समान अवसर और सम्मान चाहते हैं। उसे वह अवसर दें जिसकी वे हकदार है और वह साबित करेगी कि वह क्या करने में सक्षम है।

आत्मा का मिलन

अँधेरे में,
आत्मा एक साथ आई।
अज्ञात स्त्रोत द्वारा पुनर्मिलन
के लिए बुलाया गया,
एकजुटता से ताकत हासिल करने ।

रात,
वो रात कालेपन के साथ
गहरी होती जाती ।
क्योंकि प्रत्येक इकाई एक दुजे
से जुड़ती है ।
विलय पूर्व की सभी
विशेषताओं को लेकर
समूह का संयोजन,
एक रात के जादू में खो गए ।

विजित के के
वरिष्ठ फिट्टर

जिन्सी एम ई
आउटफिट सहायक

तेरे नाम

स्मृति के पन्नों में तेरे नाम कुछ लब्ज़ .....। एक छोटी सी मुस्कान से सुलझने वाली कुछ समस्याएं और शिकायतें थी जो दिल के एक छोटे से कोने में दफना कर आज भी हम दुश्मनों की तरह जी रहे है। यही है आज का समाज, जिसमें मैं और तुम भी शामिल है। अहंकार न खोने वाली पीढ़ी ।

इन सबसे अलग एक पीढ़ी भी। आपस में प्यार, इज्ज़त और हिफाज़त करने वाली पीढ़ी। आपस में लड़ते – झगड़ते, मगर क्षण-भर में सब भूल जाते.....। समय बीतता गया... । युग बदलते गए...। जैसे- जैसे समय बदलता गया, मानव मन मरता गया...। हिमशैल और ज्वालामुखी समय के साथ पिघल जाते हैं। प्रकृति ने इसके लिए भी एक सीमा तय की है। मगर.....। मानव हृदय पत्थर से भी अधिक कठिन है। पिघलने का नाम ही नहीं लेती।

आज न किसी को किसी से प्यार है, न हमदर्दी। सब केवल दिखावा है। केवल घृणा, अपहास और आरोप से भरी। इस भूमि में जन्म लेने के बाद माता- पिता, जो प्यार का पर्याय है, उनके छाव में पले बड़े, जब अपने पैरों पर खड़े हो जाते है, तब अहंकार का पर्याय बन जाते है। किसी के मन में प्यार नहीं। सब खाली हो चुका है। फिर भी दिल के भीतर तुम्हारे लिए जो प्यार है, वह डगमगा रहा था।

”जब आप किसी व्यक्ति का विरोध करने की कोशिश करते है..., तब उस व्यक्ति से उतनी ही गहराई से प्यार करते है, यहीं कड़वा सच है। दूर रहने की कितनी भी कोशिश करें, बात न करें फिर भी इस धरती पर कुछ भी या कोई भी आपकी जगह नहीं ले सकता।

ढेर सारे दोस्त होंगे जीवन में, उनमें कुछ लोग हमारे अपने होते है। उनमें से हमें सही मायने में समझने वाले दो – तीन ही होते है, उन लोगों की जगह न कोई ले सकता है, न उन्हें अपनी ज़िदंगी से निकाला जा सकता है.....।

तन्हा खड़ी हूँ..... फिर भी तुम्हारे ख्यालों में जी रही हूँ..... वक्त को सहारा बनाकर.....। तुम्हारी यादों के सहारे पूरी जिंदगी जी लूँगी। तुम्हारे इतंज़ार में.....। मिलना है मुझे तुमसे....। ये जीवन है तेरे नाम.....।

जोस पॉल
उप प्रबंधक

डल झील के लिए खरपतवार हार्वेस्टर- एक सीएसएल सीएसआर पहल

22 वर्ग किलोमीटर में फैली डल झील हमेशा से जम्मू-कश्मीर का गौरव और लोकप्रिय पर्यटन स्थल रहा है। डल झील के विभिन्न हिस्सों में खरपतवारों का प्रसार विशेष रूप से लिली के पत्तों की वनस्पतियों और जीवों पर भारी पड़ रहा है, विशेषज्ञों ने वनस्पति को तत्काल हटाने की सिफारिश की है। निराई के प्रयास में सहायता हेतु परिष्कृत आयात उपकरणों को नियोजित करने सहित विभिन्न उपाय किए गए। हालांकि, यह प्रयास झील में खरपतवार की विशिष्ट प्रकृति और अतिरिक्त पुर्जे की उपलब्धता/मौजूदा उपकरणों के रखरखाव की कमी के कारण समस्या पर पूरी तरह से अंकुश लगाने में सक्षम नहीं ।

डॉ. ई श्रीधरन, 'दि मेट्रोमैन", जो डल झील के निराई के समन्वय के लिए सुप्रीम कोर्ट द्वारा गठित समिति के सलाहकार थे, उन्होंने सीएसएल से डल झील को निराई करने हेतु स्थानीय समाधान का प्रस्ताव देने का अनुरोध किया जो मौजूदा आयातित उपकरणों को बदल सकता है। विभिन्न हितधारकों से उनके मार्गदर्शन और निवेशों के साथ, सीएसएल ने समस्या का विश्लेषण किया और एक अवधारणा प्रस्तावित की जिसे स्थानीय रूप से तैयार किया जा सकता है और स्वदेशी घटकों से बनाए रखा जा सकता है। प्रस्तावित खरपतवार हार्वेस्टर में एक हिताची / जेसीबी उपकरण सहित स्थापित एक स्व-चालित बार्ज शामिल था, जिसमें स्थिति रखने हेतु स्पड और आगे की वृद्धि को रोकने हेतु जडों सहित खरपतवारों को हटाने के लिए एक रेक टाइप आर्म शामिल था। खरपतवार को किनारे तक ले जाने के लिए स्लेव बार्ज मिलकर काम करेगा।

सीएसएल डीएमआरसी के साथ जुड़ गया और सीएसआर पहल के रूप में इस विचार का समर्थन किया और लागत साझा किया। सीएसएल ने तकनीकी सलाह भी दी। इस अवधारणा को डॉ. श्रीधरन और समिति द्वारा पूरी तरह से स्वीकारा गया था, और इसे मेसर्स एपीएम मरीन, आलुवा की मदद से प्रतिकृति चरण में ले जाया गया था। खरपतवार और बार्ज का निर्माण पूरा हो गया है और डल झील के लिए पारगमन में हैं और जल्द ही इसे प्रसारित किया जाएगा।

फर्डिनांड जूड डीकुंजा
वरिष्ठ प्रबंधक

रूपांतरित स्थानांतरण

सीएसएल ने वर्ष 2008 में प्राप्त ओएचएसएएस 18001 प्रबंधन प्रणाली से वर्ष 2020 में आईएसओ 45001 व्यावसायिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा प्रबंधन प्रणाली में स्थानांतरित किया है, जो मेसर्स डीएनवी द्वारा प्रमाणित है। इस स्थानांतरण ने एचएसई के स्वामित्व को सभी संबंधित विभागों को सौंप दिया और ओएच एंड एस के कार्यों को विकेंद्रीकृत कर दिया। यह प्रमाणन सीएसएल के विकास में विशेष रूप से अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में व्यावसायिक क्रेडिट बिंदुओं में से एक है। इस संदर्भ में ऑनलाइन मोड के ज़रिए आईएसओ 45001 के मूल्यांकन के साथ-साथ प्रथम स्तर के प्रमाणीकरण में 300 अधिकारियों को प्रशिक्षित किया गया ।

एचएसई शासन

सीएसएल के संबंध में एक चार स्तरीय ओएचएस शासन संरचना को रूपांकित और कार्यान्वित किया गया है जिसमें ठेकेदार के कामगार, सीएसएल कर्मचारी, अनुभाग प्रमुख, विभागाध्यक्ष, मंडल प्रमुख और शीर्ष प्रबंधन शामिल हैं। प्रत्येक विभाग ने कार्यकर्ताओं को क्षेत्र सुरक्षा प्रतिनिधि (एफएसआर) के रूप में नियुक्त किया था, जो निचले स्तर से अपने संबंधित विभागों में परिवर्तन प्रतिनिधि के रूप में कार्य करेंगे। मासिक आधार पर अनुभाग प्रमुखों को कार्यान्वयन

रिपोर्ट और विभागाध्यक्षों को प्रेरणात्मक रिपोर्ट पेश करना है। विभागीय ओएचएस गतिविधियों के समन्वय के लिए प्रत्येक विभाग में वरिष्ठ प्रबंधक या सहायक महाप्रबंधक के पद पर एचएसई समन्वयक नियुक्त किया गया है। शीर्ष प्रबंधन प्रत्येक तिमाही में प्रत्येक विभाग के संगठनात्मक निष्पादन की समीक्षा करेंगे।

एचएसई सूचकांक

प्रत्येक विभाग का एचएसई सूचकांक उस विभाग द्वारा की गई ओएचएस गतिविधियों में प्रतिक्रियाशील और सक्रिय निष्पादन उपलब्धि का मूल्यांकन करके प्राप्त किया जाता है। सुरक्षा और अग्निशमन सेवा विभाग एचएसई समन्वयकों द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट के आधार पर एचएसई सूचकांक का मासिक मूल्यांकन करता है। चूंकि निष्पादन और सेवा विभाग की गतिविधियां प्रकृति में भिन्न हैं, इसलिए सामान्यीकरण पद्धति के आधार पर इन विभागों के लिए एचएसई सूचकांक के मूल्यांकन की गणना अलग से की जाती है। प्रत्येक विभाग द्वारा प्राप्त अंक हर महीने प्रकाशित किए जाएंगे और सुधारात्मक कार्यों को लागू करने हेतु सकारात्मक प्रतिक्रियाएं प्राप्त की जाती हैं।

रमेष पी एस
वरिष्ठ प्रबंधक

कोरोना योद्धाओं को सलाम

हम जानते है कि वर्ष 2019-2020 में कोरोनावायरस महामारी वैश्विक स्तर पर जीवन को प्रभावित कर रहा है। अत्यधिक संक्रामक कोरोनावायरस रोग 2019 (कोविड-19) गंभीर तीव्र श्वसन सिंड्रोम कोरोनावायरस 2 (सार्स-कोव-2) के कारण होता है। यह पहली बार वुहान, चीन में देखा गया था, जहां इसका प्रकोप दिसंबर 2019 को पहली बार पहचानी गई थी। लगभग 3 महीने के बाद, 11 मार्च 2020 को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे एक महामारी की मान्यता दी।

एक ओर भारत और दुनिया भर में बड़े पैमाने पर लोग अपने घरों तक ही सीमित हैं, जहां सभी व्यवसाय और शैक्षणिक संस्थान वायरस को रोकने के प्रयास में लगे हुए हैं और दूसरी ओर डॉक्टर, स्वास्थ्य सेवा कार्यकर्ता और चिकित्सा कर्मचारी सदस्य सामने से कोविड-19 के खिलाफ लड़ाई का नेतृत्व कर रहे हैं। हमारा जीवन बचाने हेतु निस्वार्थ दृढ़ संकल्प के साथ वे अपनी जान जोखिम में डाल रहे हैं। वे वास्तव में इस चुनौतीपूर्ण समय में हमारे नायक हैं। वे अपने स्वयं का स्वास्थ्य, परिवारों और सबसे महत्वपूर्ण रूप से अपने स्वयं के जीवन को खतरे में डाल रहे हैं।

डॉक्टर, नर्स और स्वास्थ्य सेवा क्षेत्रों में काम करने वाले लोग विशेष रूप से अत्यधिक संक्रामक बीमारी की चपेट में हैं। कम संसाधन वाले डॉक्टरों को अभूतपूर्व चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। नींद से वंचित नायकों की सूची में डॉक्टर, नर्स, मेडिकल क्लीनर, पैथोलॉजिस्ट, पैरामेडिक्स, एम्बुलेंस चालक और स्वास्थ्य सेवा प्रशासक शामिल हैं। कोरोनावायरस के प्रकोप के बाद से, स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों ने न केवल रोगियों को ठीक करने और उनकी जान बचाने की संतुष्टि का अनुभव किया है, बल्कि कई डॉक्टरों ने तो ड्यूटी के दौरान अपनी जान तक कुर्बान कर दी है।

अपने परिवार और प्रियजनों से दूर रहते हुए निस्वार्थ योद्धा स्वास्थ्य सेवा में अपना सब कुछ दे रहे हैं। मानवता की सुरक्षा और कल्याण के लिए वे जो बलिदान दे रहे हैं वह अमूल्य है और हमारी ओर से आजीवन कृतज्ञता के पात्र हैं। कोरोना योद्धा अपनी जान जोखिम में डालकर हमारी जान बचा रहे हैं। कई संक्रमित हो गए हैं। कई लोगों की जान चली गई हैं। उन्हें उचित पीपीई किट नहीं मिल पाता हैं। कुछ उन्हें पीट रहे हैं, कुछ उन पर थूक रहे हैं, कुछ उन्हें घर वापस जाने की अनुमति नहीं देते हैं। फिर भी वे अथक संघर्ष कर रहे हैं।

भारतीय वायुसेना ने देशभर में कोविड-19 के इलाज में लगे अस्पताल पर हेलिकॉप्टर से फूलों की बौछार की है। भारतीय वायुसेना ने कोरोना योद्धा को आभार जताया है। जब आशा ने हमें छोड़ दिया, जब प्रार्थना अनुत्तरित रही, तो इन योद्धाओं ने हमें आशा और जीवन दिया। कोरोना योद्धा सभी हमारी प्रशंसा और समर्थन के पात्र है। सब कोरोना योद्धाओं को सलाम।

संपत्त कुमार पी एन
सहायक महाप्रबंधक

गुप चुप की कहानी

हिंदी में गुप चुप शब्द सुनकर हमें क्या याद आता है? हाँ, एक सख्त माता-पिता अपने नटखट बच्चों को चुप रहने को कह रहे हो?

उत्तर भारत के मेरे मित्र, विशेष रूप से छत्तीसगढ़ के, जहाँ मैंने अपनी अधिकांश जवानी बिताई है, इस गुप चुप शब्द को किसी और चीज़ से भी जोड़ते हैं। हाँ, आपने सही सोचा। पानी पुरी।

सड़क के किनारे और व्यस्त बाज़ारों पर विक्रेताओं द्वारा परोसा जाने वाला पानी पुरी (जिसे गोलगप्पा, फुचका और कई अन्य नामों से भी जाना जाता है) एक मज़ेदार ज़ायका है। यह सीधा सादा गली का भोजन एक बेहतरीन संतलक है- एक पानी पुरी स्टॉल पर, आप देखेंगे कि शहर के सबसे उन्नत वर्ग के लोग अपने आकर्षक कारों से बाहर निकलकर गरीब निवासियों के साथ कतार में शामिल होने के लिए बेताब होते है।

मैदा या गेंहू से बनी यह कुरकुरी खोखली गेंद, मसालेदार आलू से भरी, तीखी व मसालेदार इमली के पानी से भरा हुआ ऊपरी सतह और पुदीने की पत्तियां व काले नमक से सुगंधित व्यंजन, कई लोगों के लिए एक जादुई भोजन है।

चाटवाले भैया का एक ही वक्त में अनेकों को परोसने का एक तरीका है। यह देखने लायक एक खूबसूरत कला है। चाटवाले भैया पहले एक पूरी उठाता है, एक तरफ तर्जनी से उसे छेदता है, उसमें एक चुटकी मसला हुआ आलू, मटर

की सब्ज़ी या छोले की सब्ज़ी (चना) मिलाता है और इसे मसालेदार इमली के पानी में डुबोता है और कतार में खड़े ग्राहकों को एक के बाद एक परोसता है। इसे खाने का भी एक तरीका है। नींबू के आकार की पानी पुरी को एक साथ मुँह में डाला जाना चाहिए ताकि छलकने से बचा जा सके।

इसकी उत्पत्ति कहाँ से हुई ? बहुत से लोग मानते हैं कि यह उत्तर मगध राज्य के इतिहास में निहित है। मगध राज्य गंगा नदी के तट पर स्थित था जो अब पश्चिम-मध्य बिहार में है। ऐसा माना जाता है कि फुल्की (पानी पुरी का पहला अवतार) पहली बार मगध में उस समय प्रचलित हुआ जब इस क्षेत्र की कई पारंपरिक विशिष्टताएं विकसित हो रही थीं। उनका आविष्कार करनेवाला पाक प्रतिभा इतिहास के पन्नों में खो गया है, लेकिन अगर भारतीयों को पता होता कि पानी पुरी (या जो भी आप इस लाजवाब भोज्य को कहते हैं) का आविष्कार किसने किया, तो वे उस व्यक्ति को सदियों के लिए धन्यवाद देते।

पानी पुरी से जुड़ी एक और किंवदंती है। यह महान महाकाव्य महाभारत से है। महाकाव्य महाभारत में, नवविवाहित द्रौपदी अपनी सास कुंती द्वारा दिए गए कार्य के लिए घर पहुँचती है। पांडव वनवास पर थे और कुंती यह देखना चाहती थी कि क्या उनकी नई बहू कम सामग्रियों के साथ गृहस्थी संभाल पाएगी? इसलिए उसने द्रौपदी को कुछ बचे हुए आलू की सब्ज़ी और सिर्फ एक पूरी बनाने के लिए पर्याप्त गेंहू का आटा दिया, उसे ऐसा खाना बनाने का निर्देश दिया जो उसके पांचों बेटों की भूख को मिटा सके। ऐसा माना जाता है कि तब नई दुल्हन ने पानी पुरी का आविष्कार किया।

अपनी बहू की सरलता से प्रभावित होकर, कुंती ने पकवान को अमरता का आशीर्वाद दिया।

जबकि इस स्वादिष्ट भोज्य की उत्पत्ति अभी तक ऐतिहासिक सटीकता के साथ स्थापित नहीं हुई है, एक बात जो स्पष्ट है वो यह है कि पानी पुरी ने अपने ज़ायके से देश को अपने काबू में कर लिया।

एक दशक पहले भी, मेरा शहर एर्णाकुलम, इस सादे भोजन से उतना परिचित नहीं था। दक्षिण भारत के कई राज्यों में यही स्थिति थी।

अंतर्राज्यीय प्रवास और उत्तर भारत की संस्कृति के संपर्क ने हमें इस स्वादिष्टता से अवगत कराया। अब मेरे शहर में ऐसी कोई गली नहीं है जहाँ आप ठेले में एक चाट केंद्र नहीं देख सकते हैं जो इस स्वादिष्ट नाश्ते को परोसता है।

दिलचस्प बात यह है कि भारत में चाट का व्यापार करोड़ों रुपए का है। यह कई लोगों को स्वरोज़गार प्रदान करता है। एक निपुण चाट व्यवसाय एक परिवार के गुज़ारे के लिए उचित आय से भी ज़्यादा पैसा प्रदान कर सकता है।

आजकल अधिकांश आधुनिक रेस्ट्रा ने भी इस लाजवाब भोजन को परोसना शुरू कर दिया है। एक थाली में चार-पांच पानी पूरियां एक साथ परोसी जाती हैं। लेकिन यह सड़क पर यादव भैया या ठाकुर भैया से मेल नहीं खा सकता है, जो उस कुरकुरे मसालेदार स्वादिष्ट करामती को खाने के लिए अपनी बारी का इंतज़ार करते हुए अपने हाथों में पत्ते से बने कटोरे पकड़े हुए अपने ग्राहकों को पानी पुरी परोसते हैं।

सफरनामा

"ग्रीनबर्ग" - एक सुहाना सफर

सरिता जी
उप प्रबंधक

आज के ज़माने में सफर मानव जीवन का एक अभिन्न हिस्सा बन चुका है, क्योंकि यह हमें अपनी व्यस्तता से विराम देता है। ये बदलाव, सिर्फ अपने लिए ही नहीं, पूरे परिवार पर सकारात्मक रूप से प्रभाव डालता है । कभी-कभी हमें हमारे सभी तनाव और चिंताओं को छोडकर हमारे स्वास्थ्य को बेहतर करने और दिमाग में नई ताज़गी भरने के लिए ऐसे कई सफर करना चाहिए ।

जैसे कि आप सभी को पता है, हमारा राज्य केरल, प्राकृतिक सौंदर्य के लिए मशहूर हैं। यहां ऐसे बहुत सारे छोटी-छोटी जगह हैं, जहां प्रकृति का हरा-भरा परिदृश्य बहुत ही हसीन है, जिसके सुहानेपन को शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता, बल्कि इसे सिर्फ महसूस किया जा सकता है। "ग्रीनबर्ग" रिसॉर्ट की ओर बढ़ी यात्रा, एक सुभग यात्रा थी, जहां प्रकृति की सुंदरता में हम अपने आप में खो जाते हैं ।

ग्रीनबर्ग रिसॉर्ट इडुक्की जिले के कुलमाव में स्थित एक शानदार जगह है, जहां एक ही छत के नीचे बहुत सारे नज़ारे हैं। यह समुदी तल से 3000 फीट ऊपर स्थित है। रिसॉर्ट में आते समय हम कुछ पल केलिए प्रकृति का हिस्सा बन जाते हैं। यह हरी-भरी पहाड़ियां, हवादार घास के मैदान, हरे-भरे पेड़ और खूबसूरत झीलों वाला एक सदाबहार स्वर्ग है ।

हमने 15.04.2021 को ग्रीनबर्ग रिसॉर्ट में जाने का फैसला किया। हम आठ बजे वहां पहुँचे । रिसॉर्ट के प्रवेश द्वार तक पहुंचने का रास्ता भी बहुत ही रोचक था। रिसॉर्ट में सब कहीं हरियाली ही हरियाली थी। वहां पहुँचने पर वहां के स्टॉफ ने हमें बहुत ही गर्मजोशी से स्वागत किया । वहां के सभी लोगों का व्यवहार भी काफी अच्छा रहा । यह एक बेहतरीन रिसॉर्ट है, जो 70 एकड़ की हरीतिमा भूमि में सभी आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण है। यहां कुल 33 डीलक्स कमरे हैं जो गार्डन व्यू और वाटर फ्रंट व्यू के साथ सुसज्जित है । जब हम गए उस दिन कोविड-19 के फैलाव के कारण उस रिसॉर्ट में केवल तीन परिवार ही थे। इसलिए पूरे मौज-मस्ती के साथ भीड़- भाड़ के बिना वहां की सुविधाओं का आनंद उठाने का मौका मिला। हमारा कोटेज बहुत ही निचले तल पर था, जिसके लिए हमें बहुत ही सीढ़ियां उतरनी पडी । लेकिन पक्षियों का चहचहाना, विविध प्रकार के पौधे, वृक्ष आदि को देखते-देखते कब कोटेज पहुँचे पता भी नहीं चला। हमारे कोटेज के आसपास छह कोटेज और भी थे, जिसमें एक ही परिवार था। पास में एक स्विमिंग पूल भी था। रोचक प्राकृतिक वातावरण में आकर्षक ढंग से डिज़ाइन किए गए कॉटेज में एक हनिमून स्पेशल ट्री-हाउस भी था जो हमारे कोटेज के पास ही था, जिसमें उस समय नवीकरण चल रहा था।

पहली बार आने के कारण, अकेले रिसॉर्ट देखना एक मुश्किल भरा काम था। विनोद नाम के एक व्यक्ति ने हमारा साथ दिया। उन्होंने सभी जगह बड़े चाव से दिखाया। ग्रीनबर्ग में नौ जल निकाय हैं, ये सभी वर्षा जल संचयन और भूजल पुनर्भरण प्रणाली हैं जो विशेष रूप से नौका विहार, कयाकिंग, बाम्बू राफ्टिंग, रिवर क्रॉसिंग, वाटर साइक्लिंग आदि केलिए उपयोग किए जाते हैं ।

सबसे पहले हमने एक साहसिक कार्य किया, वो था रिवर क्रॉसिंग। मैं, मेरे पति, मेरी बेटी नेहा ने बडी उत्सुकता के साथ रिवर क्रॉसिंग किया जो बहुत ही दिलचस्प था। इसके बाद कुछ दूर पैदल चलकर हम नौका विहार करने के लिए पहुँचे। उस जगह की सुंदरता का क्या कहना... हम तो लब्ज़ों में भी बयान नहीं कर सकते, उतना लाजवाब था। नौका विहार केलिए वहां एक छोटी सी झील थी, झील के आसपास चाय का बागान था। नौका विहार करते समय हल्की सी बारिश हो रही थी। फिर भी, हमने पूरा आनंद उठाया।

बाद में हम दोपहर का भोजन करने केलिए रेस्टोरेंट पहुंचे, जिसका नाम था 'कोडुमुडी'। उस समय वहां और कोई नहीं था, शानदार माहौल में बडी तसल्ली के साथ हमने भोजन किया। सभी खाद्य सामग्रियां वहीं पर उगाई जाती थी।

इसलिए भोजन भी बहुत ही स्वादिष्ट था। वहां सब्ज़ी, पशु सभी का फॉर्म था। भोजन के बाद, हम सायादार रास्ते पर टहलने के लिए गए। बारिश के बाद मौसम कुछ ठंडी थी, तेज़ हवा चल रही थी और वहां दूर सुंदर पहाडियों का रमणीय दृश्य मन को मोह लेनेवाली थी।

वहां हमने कुछ समय बिताया, फोटो खींचा, बच्चे कुछ समय तक उद्यान में खेलते रहे। मेरी बेटियों ने यहां आकर पूरी मौज - मस्ती की। हमें उस बगीचे में तरह-तरह के वृक्ष, फल आदि देखने को मिला। उसके बाद, हम वहां के फार्म की ओर गए। पशु फार्म में बहुत सारे जानवर थे, जैसे कि विशेष तरह की गाय, बकरियां, बतख, मुर्गियां, सुअर आदि और इसके पास ही सब्जियों का फार्म भी था। सब कहीं हरियाली ही हरियाली छायी हुई थी।

शाम को हम स्विमिंग पूल गए। मेरी बेटियां वहां जाने केलिए बेचैन थी। वहां बच्चों और बडों केलिए अलग-अलग पूल था। स्विमिंग पूल में सिर्फ, हम ...। वहां भी कोई नहीं था। बहुत ही मज़ा किया। एक घंटे से ज़्यादा हमने वहां बिताया। तभी घमासान बारिश होने लगी। बारिश में... खुले पूल में... पानी में... मौज-मस्ती करना एक अलग सी बात है। बच्चों को पूल से वापस निकालना थोड़ा मुश्किल था। बारिश के साथ-साथ बिजली भी कडक रही थी, हम जल्द ही अपने रिसॉर्ट की ओर चल पड़े। जीवन की व्यस्तता के बीच ऐसा एक अनुभव, मन को सहला देता है। रात में भारी वर्षा हुई, इसलिए बहुत ठंड महसूस हो रही थी। राहत और चैन के कारण, अच्छी नींद भी आई। सभी जल्दी सो गए।

दूसरे दिन, 16.04.2021 की सुबह सात बजे हम ट्रकिंग केलिए रवाना हुए। 20 मिनट पैदल चलकर एक पहाड के ऊपर जा पहुंचे। कोई भी वहां जा सकता था। सीधा रास्ता था। वहां का दृश्य इतना मनमोहक था कि मानो आसमान धरती को छूम रहा हो। इसे बयान करने केलिए वाकई में... मेरे पास लब्ज़ नहीं है ...। यकीनन ... दिल को छू लेनेवाला...। इसके बाद हमने रॉप क्लैबिंग का साहसिक काम किया। मेरे पति और मेरी बेटी दोनों चढ़ गए, वहां कुछ पल बिताने के बाद, हम नाश्ता करने रेस्टोरेंट गए। वहां का नाश्ता भी लाजवाब था। नाश्ते के बाद, हमें वहां से रवाना होना था।

एकाध दिन का सैर... लेकिन जिंदगी भर के लिए... एक यादगार लम्हा...। इतनी हरियाली कहीं और देखने को नहीं मिलेगा। यदि आप जीवन में पूरा मनोरंजन और आनंद चाहते हैं, तो, आपको ज़िंदगी में एक बार यहां "ग्रीनबर्ग" रिसॉर्ट में ज़रूर आना चाहिए। यहां से वापस जाते समय, हमने मन में तय किया कि *'एक और बार यहां ज़रूर आएंगे...।*

सुमी एस
उप प्रबंधक

आत्मकथा

एक दर्दनाक विदाई !

14 दिसंबर 2020, एक ऐसा दिन जिसे मैं अपनी ज़िंदगी में कभी भूल नहीं सकती। यह वो दिन है जब मैंने अपने जीवन के किसी खास व्यक्ति को खोया था। जब मैं खास कहती हूं, तो इसका मतलब यह नहीं है कि मैं उसे लंबे समय से जानती हूं। वास्तव में, मैंने उसे देखा भी नहीं है। मुझे पता भी नहीं है कि वो कैसी दिखती है, कैसे बात करती है या वो कैसी है। फिर भी वो मुझे बहुत ही प्यारी है क्योंकि ज़िंदगी की हर पहली चीज़ हमारे लिए हमेशा खास होती है। चाहे वो आपका पहला प्यार हो, पहली नौकरी हो या पहली तनख्वाह। हर पहली चीज़ हमारे दिल में एक विशेष मायने रखती है और मेरे लिए भी ऐसा ही है - मेरा पहला बच्चा और उसकी यादें।

उसने मुश्किल से मेरे साथ 7 महीने बिताए। मेरे साथ माने मेरी कोख में। उसको बचाने के लिए मैंने जो संघर्ष झेला है वो शब्दों से परे है। गर्भावस्था के दौरान, मुझे कई उलझने उठानी पड़ी। मुझे शारीरिक और मानसिक रूप से काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। लगातार अस्पताल का चक्कर लगाना, बच्चे पर जानलेवा कोविड-19 फैलने का डर, बार-बार इंजेक्शन की चुबन, भारी खुराक वाली दवाएं, काम का तनाव, सभी प्रकार के भोजन से घृणा, सख्त पीठ दर्द और क्या नहीं...। मैं सच में कठिन दौर से गुज़र रही थी।

लेकिन फिर भी मैंने अपने आप को यह कहते हुए तसल्ली दिलाने की कोशिश की, कि चलों! तुम गर्भवती होनेवाली पहली महिला नहीं हो। यह सब आम बात है और हमारे जीवन का हिस्सा है। ज़िंदगी के बदलावों को स्वीकार करों और सिर्फ उस नन्हीं सी जान का सपना देखो जो तुम्हारे कोख में पल रहा है और जो तुम्हें मां कहेगा। इसलिए, मैंने बहुत मुश्किल से सब कुछ भुलाने और सहन करने की कोशिश की। मेरे परिवार ने मेरा बहुत साथ दिया और मुझे खुश और स्वस्थ रखने का हर संभव प्रयास किया। मुझे पूरा यकीन था कि यह कठिन समय भी बीत जाएगा और कुछ महीनों के अंदर मेरी गोद में मेरा बच्चा होगा। लेकिन भगवान की मर्ज़ी कुछ और ही थी। एनोमली स्कैन के दौरान, मेरे डॉक्टर ने मुझे बताया कि मेरे बच्चे के शरीर के अंदर इधर-उधर सूजन है। जल्द ही हमें इसे गर्भपात करना होगा। अपने आंसुओं को छिपाते हुए और बड़ी आशा के साथ मैंने अपने डॉक्टर से पूछा, क्या हम इसे ठीक करने के लिए कुछ नहीं कर सकते? क्या हमारे पास उसे बचाने का

कोई चारा नहीं है? उन्होंने कहा नहीं... कुछ नहीं किया जा सकता। मैं दंग रह गई। मैं रोई। मैंने अपनों के सामने अपनी आंसू रोकने की बहुत कोशिश की। लेकिन नहीं कर पाई। डॉक्टर ने कहा कि अगर हम इसे और आगे बढ़ायेंगे तो यह मेरी जान केलिए ही खतरनाक साबित हो सकती है।

कैसी विडंबना..! जिस व्यक्ति के बारे में मैंने यह सोचा कि वो मेरी ज़िंदगी को बदल देगा, हमारे जीवन में खुशियां लाएगा, वही मेरी जान को खतरा बनने जा रहा है। फिर भी, हम दूसरी राय के लिए दूसरे डॉक्टर के पास गए। उन्होंने भी कहा कोई चारा नहीं, हमें इसे गर्भपात करना ही होगा वरना देर-सबेर बच्चा गर्भ के अंदर ही मर जाएगा। बहुत मुश्किल से मैंने अपने मन को काबू में लाने की कोशिश की। मैं अपने आप से कहती रही, देखो... तुम्हें उसे जाने ही देना होगा...। वो ठीक नहीं है; वो दर्द में है और हर पल संघर्ष कर रही है। उसे और दर्द मत दो, उसे जाने दो...। मैंने इस सच्चाई को स्वीकार करने की कोशिश की। एक माँ होने के नाते जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी उसे छोड़ देने में ही उसकी भलाई है। फिर एक दिन बाद सी-सेक्शन के ज़रिए मेरी ज़िंदगी के उस अध्याय का अंत हो गया। भारी मन से मैंने उसे अलविदा कह दिया...।

मुझे अभी भी इस बात का अफसोस है कि मैंने उसकी एक झलक भी नहीं देखी, और इस का भी अफसोस है कि मैं उसे एक बार भी अपने सीने से नहीं लगा पाई...। मुझे इस का भी पछतावा है कि मैं उसके नन्हें-नन्हें पैरों और हाथों को छू न सकी। मुझे खेद है कि न तो मैं उसे गले लगा सकी न ही उसे चूम सकी। लेकिन, सुनो मेरी गुड़िया, मुझे मालूम है कि तुम मुझे, तुम्हारे पापा और तुम्हारे दादा-दादी को स्वर्ग से देख रही हो। हम तुम्हें बहुत प्यार करते हैं और तुम्हें बहुत याद भी करते हैं, आज और हमेशा के लिए....। ये मेरा तुमसे वादा है कि सभी अनकही कहानियां और अनसुनी लोरियां और सभी अच्छे पल जो हम एक साथ न बिता सके, वो पल एक बार ज़रूर आएगा और मैं उस खूबसूरत मिलन का बेसब्री से इंतज़ार कर रही हूं...। मेरी छोटी परी अपना ख्याल रखना। ढेर सारा प्यार...तुम्हारी माँ...।

प्रिया ए बी
इंस्ट्रुमेंट मेकानिक

आत्मकथा

ड्राइविंग लाइसेंस

ज़िंदगी में कभी भी ड्राइविंग लाइसेंस ऐसा सोचा नही था । सब कि तरह मेरा भी एक सपना था गाड़ी चलाना । इस सपने को पूरा करने कि चाहत में 18 साल होते ही मैं भी एक ड्राइविंग स्कूल पहूँची । उन्होंने नेत्र परीक्षण प्रमाण पत्र लाने को कहा । जब नेत्र चिकित्सक के पास पहूँची तो पता चला मेरी "एककोशिकीय दृष्टि" (एक आँख में अंधेपन) के कारण मुझे प्रमाण पत्र नही मिलेगा। वहाँ से मैं हताश होकर निकली। अपने सपने को दिल की गहराइयों में छुपाकर मैं ज़िंदगी जीने लगी। इसी बीच 2013 में, कोचीन शिपयार्ड में आउटफिट सहायक के रूप में शामिल होने का अवसर प्राप्त हुआ।

उन दिनों मेरी दोस्त शरीना जो मेरे साथ काम करती थी, उसके साथ मैं ड्राइविंग स्कूल पहूँची। जो सपना, दिल के कोने में छुपाया था फिर उभर आया। परीक्षण के लिए दुबारा जनरल अस्पताल, एरणाकुलम पहुँची । मन में ढेर सारी आशा लेकर । मगर किस्मत ने वहाँ भी मेरा साथ छोड़ दिया। चिकित्सक ने ये फैसला सुनाया कि मेरा सपना इस जीवन में सफल नहीं होगा ।

करीब दो साल की उम्र में मैने अपने एक आँख की रोशनी खो दी थी। आँखों में चूना गिरने की वजह से एक आँख जल गया । आँख हमेशा बंद रहने के कारण, चिकित्सक ने कहा, वो कुछ नही कर सकते । उस दिन मुझे अपनी किस्मत से, अपनी आँखो से, अपनी ज़िंदगी से, नफरत होने लगा। मेंने पहली बार भगवान से शिकायत की ।

कहते हैं, अगर किसी चीज़ को दिल से चाहो, तो पूरी कायनात उसे तुमसे मिलाने की कोशिश में लग जाती है। 21.11.2017 को मोटर वाहन अधिनयम 1988 को संशोधित किया गया की, "गैर- वाणिज्यिक कारों और मोटर साइकिलों के लिए ड्राइविंग लाइसेंस देने के लिए एककोशिकीय रूप से विकलांग व्यक्तियों पर विचार किया जा सकता है "।

ये समाचार सुनते ही जो सपना मैंने अपने दिल की गहराइयों में दफन कर दिया था वो फिर से जाग उठा । मैं जल्द ही एक ड्राइविंग स्कूल पहुँची । उन्हें इस नियम के बारे में समझाया, और वो मान गए । नेत्र चिकित्सक से जब प्रमाण पत्र मिला तो मुझे लगा कि जैसे ड्राइविंग लाइसेंस ही मिल गया है ।

एक बार फिर किस्मत ने साथ छोड दिया। कुछ स्वास्थ्य समस्या के कारण मुझे अस्पताल में भर्ती किया गया। तीन महीने बाद आखिर वो दिन आ ही गया। तीन महीने बाद, पहले से कही अधिक जोश के साथ मैंने ड्राइविंग सीखना शुरू किया।

27.05.2019 को मुझे दो पहिए और चार पहिए का लाइसेंस मिला । वो पल मुझे ऐसा लग रहा था कि मानो मैंने पूरी दुनिया को मुट्ठी में कर लिया हो । ऐसा लग रहा था कि मैंने ऑस्कार पुरस्कार प्राप्त कर लिया हो । मैं ने खुद को दुनिया की रानी की तरह महसूस किया । मेरा ख्वाब यकीन में बदल गया ।

बाद में मैं ने एक दो पहिया वाहन "ज्यूपिटर सेंड़ एक्स" खरीद लिया । इन आसमानों के नीचे, जब मैं अपने "मयूर वाहन" में उडती हूँ तो ऐसा लगता है कि मेरा जीवन सफल हो गया हो । हर सफर एक नया अनुभव बन रहा है ।

सडक के किनारे पैदल चलने वाली, आज अपने "मयूर वाहन" में हर एक को पीछे छोड़ आगे जा रही है। मुझे लाइसेंस मिलने के बाद मैं ने ये बात मेरी ही तरह "एककोशिकीय दृष्टि" वाले व्यक्ति को बताई । उस व्यक्ति को भी बाद में ड्राइविंग लाइसेंस मिला। जब मुझे ये बात पता चला, तो मैं फूले - नहीं समा पाई, क्या, मैं भी किसी की प्रेरणा बन सकती हूँ । हाँ, आज मुझे यकीन है कि मैं आगे भी कई लोगों की प्रेरणा बनूँगी ।

अनिलकुमार के बी
कनिष्ठ तकनीकी सहायक

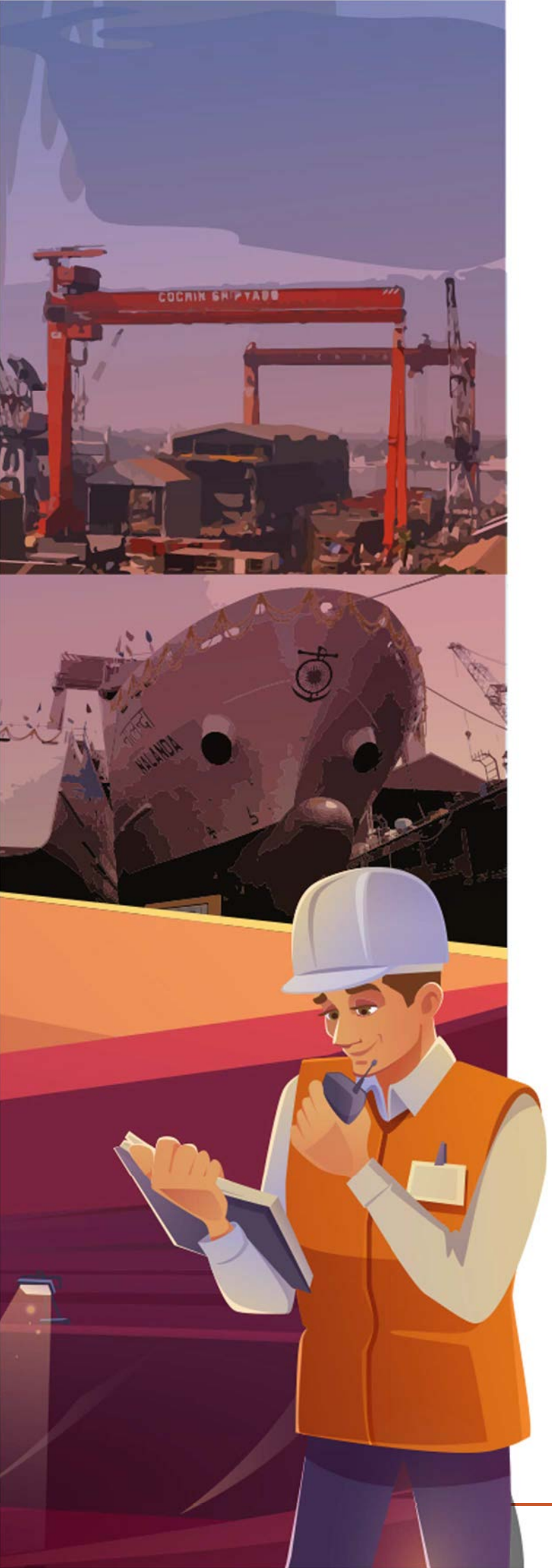

मेहरबानी

नमन करता हूँ मैं, शीश झुकाकर
नमन करता हूँ मैं, अपने शिपयार्ड को ।
यहीं है ईश्वर का वास,
यहीं है मेरे भगवान भी ।
अच्छे लोग है यहाँ
प्रतिभाशाली कार्यकर्ता भी ।
लोहे की शीट को काट कर,
कागज़ की तरह मोड कर,
विशाल जहाज़ों और नावों का
निर्माण करते ।
एक नहीं, दो नहीं कई प्रकार के
नावों कि रचना है होती,
कोच्ची झील की गोद में,
अनगिनत जहाज़ है उतरते ।
गर्व है मुझे नए ज्ञान पाने में,
गर्व है मुझे यहाँ काम करने में,
आखिरकार मैं भी श्रमिक हूँ यहाँ का ।
मेरे लिए हमेशा एक खज़ाना है,
मेरे लिए ईश्वर की मेहरबानी है,
कोच्ची झील के किनारे स्थित ये शिपयार्ड।
मुझे पता है, जीवन अनमोल है,
सीख रहा हूँ, आज भी ज़िन्दगी को ।।

हन्ना पी एम
फिट्टर

जुगुनु

"जुगुनु" जीवदीप्ति उत्पन्न करने वाला छोटा सा जीव। रात के समय पेड़- पौधों के झुरमुट के आस-पास चमकती हुई ...। प्रकृति की अनमोल देन ...। बचपन में बहुत सारे हुआ करते थे । रात को रोशनी फैलाती ...। जिसे देखने से ही मन खिल उठता ...।

बरसों बाद एक रात जब में अपने घर के छत पर बैठी हुई थी, दूर एक रोशनी दिखाई दी । ध्यान से देखा तो वो उड रही थी । पहले एक, दो फिर अनेक । अरे , ये तो जुगुनु हैं । मन खिल उठा । ऐसा लगा जैसे कोई खोई हुई चीज़ वापस मिल गई हो । उन जुगुनुओं को देखते-देखते एक कहानी याद आई, जो मैं आज आपको भी बताती हूँ । यह कहानी एक वास्तविक घटना है । भारत के उत्तर पश्चिम में स्थित एक राज्य "राजस्थान" । "पिपलांत्री" राजस्थान के जैसलमेर ज़िले का एक छोटा सा गाँव । जहाँ आज भी कन्या भ्रूण हत्या या जन्म के बाद नवजात लड़कियों की हत्या की जाती है । जहाँ माँ का दूध दिए बिन भूखा मार दिया जाता है, या नवजात बच्चियों के मूँह में अनाज, रेत, गर्म पानी या अफीम डालते है, या दूध में डुबो-डुबो कर मार डालते है । जहाँ आज भी औरतों को मात्र एक साधन समझा जाता है और उनका शोषण किया जाता है ।

सालों पुरानी बात है । ये कहानी शुरु होती है पिपलांत्री के एक छोटे से घर में जहाँ "हीना" का जन्म हुआ था । जाहिर सी बात है, लड़की थी इसलिए उसे भी मारने की पूरी कोशिश की गई । क्या अजीब किस्मत पाकर हीना पैदा हुई थी, वो हर कोशिशों को नाकाम कर ज़िन्दगी की ओर बढ़ती गई। जहाँ लड़कियों को सिर्फ बोझ माना जाता है, वहाँ हीना बचते -बचाते पलने लगी, खिल, खिलाने लगी। जब हीना चौदह साल की थी, उसकी भी शादी करा दी गई। मात्र दो साल में ही बाँझ करार दे दिया गया । अब उसका पति दूसरी शादी करना चाहता था । पति और उसके घर वाले दहेज के नाम पर हीना पर अत्याचार करने लगे । हीना सब कुछ चुप-चाप सहती रही । वो किसी भी हाल पर पति का घर छोड़ना नहीं चाहती थी । एक दिन पति ने हीना के ऊपर तेज़ाब फेंक दिया। उन दिनों तेज़ाब हर गलियों में आसानी से मिल जाता था। हीना चीखने लगी, चिल्लाने लगी । उसका बदन तेज़ाब से जल रहा था । गल रही थी । पिघल रही थी। घर वालों ने उसकी मदद नहीं की। जैसे -तैसे वो घर से बाहर निकली । कोई उसके मदद के लिए नही आया । वो बेहोश होकर ज़मीन पर पड़ी रही। किसी राह चलते आदमी ने अस्पताल पहुँचाया । हीना की

जान बच गई, पर चेहरा खराब हो चुका था । सिर्फ चेहरा ही नहीं, शरीर का आधा हिस्सा भी तेज़ाब से जल गया था । ऐसा था कि अगर कोई हीना को देखे, तो डर के मारे जान ही निकल जाए। वापस पति के घर पहुँची तो, उन लोगों ने धक्के मार कर बाहर निकाल दिया। हीना अपनी माँ के पास लौट आई ।

हीना जीने की हर उम्मीद खो चुकी थी । इस डरावने रुप के साथ जीना मुश्किल हो रहा था। वो खुद को खत्म करने ही वाली थी, सामने जुगुनुओं को देखा । बचपन में हीना इन्हीं जुगुनुओं के साथ खेलती थी । वो उन्हें अपना दोस्त मानती थी । उन्हें देखते ही हीना का मन शान्त हो गया और उसने अपना इरादा बदल लिया। वो जीने लगी।

किसी भी तरह वो अपनी जिन्दगी गुजार रही थी, अचानक बहुत बडा कहर टूट पडा और ये कहर गाँव वालों के रुप में था। गाँव वालों ने उसे चुड़ैल करार दे दिया। उनका कहना था की हीना के रहते गाँव के उपर चुड़ैल की काली साया हमेशा रहेगी। इसलिए गाँव वालों ने हीना को जान से मारने का निर्णय लिया । एक काली रात में बीच चौराहे पर उसे जिन्दा जला दिया। वो जल रही थी। उसमे से आग के छोटे-छोटे कण हवा में उड रहे थे ऐसा लग रहा था जैसे हीना की आत्मा शरीर छोड़ बाहर आ रही है। आग के वो छोटे कण हवा में विलीन हो गई और साथ में हीना की आत्मा भी। हीना जल कर राख हो गई।

उस वक्त दूर पेडों में जुगुनु झिलमिला रही थी, उन आग के कणों की तरह। आज जब मैं जुगुनुओं को देखती हूँ, तो ऐसा लगता है कि शायद उन जुगुनुओं में एक "हीना" हो। अपने दोस्तों के साथ।

पीटर एम तुरुत
अनुदेशक

संस्मरण

अश्रुपूजा

भारतीय नौसेना से वीआरएस लेने के बाद मैंने अध्यापक का पदभार संभाला। वो भी घर के पास के निजी इंजीनियरिंग कॉलेज में। मेरी ज़िंदगी में सैनिक अनुभव होने से और उसी में चार साल का तकनीकी प्रशिक्षण हासिल करने के कारण दूसरे अध्यापकों से भिन्न, विद्यार्थियों के साथ मेल-जोल बढ़ाने का सौभाग्य मिला। उनके दिलों को छूने वाली यातनाओं, विषमताओं और सपनों को मेरे साथ बिना भेदभाव के बांटा।

एक छोटी सी सांत्वना, एक हल्की सी सहलाहट, थोड़ी सी सराहना ऐसा बहुत कुछ उन्होंने मुझसे उम्मीद की थी।

ऐसे गहरे संबंध के कारण उस दिन अभिजीत मुझसे मिलने आया। वो उस वक्त बहुत ही चुस्ती में था। वह भरपूर यौवनावस्था से युक्त था और उसकी आँखों में शरारत थी। लेकिन उस दिन अभिजीत के चाल-चलन में कुछ गड़बड़ी महसूस हुई।

"सर माहौल बहुत ही बुरा है।"

बताओ..... क्या हुआ! मैं जो पढ़ रहा था उसी में मग्न होकर मैंने मामला जानने की कोशिश की, उसने जो कहा उसका सार यह था.....

उसके साथ कॉलेज में पढ़ने वाली एक लड़की एक बेरोज़गार लड़के के साथ भागने के लिए तैयार हो रही है। उसको मेरी मदद चाहिए..... पढ़ाई खत्म होने के बाद, काम मिलने तक मैंने रुकने को कहा लेकिन उसकी समझ में यह सब कहाँ से आएगा। उसकी सभी चिट्ठियां अभिजीत के नाम पर ही आती थी। इसलिए एक पछतावा। यहीं नहीं उसके तरफ से एक धमकी भी थी कि, अगर घरवालों को पता चला तो वो खुदखुशी कर लेगी। अगर कुछ हो गया तो उसे डर था कि पुलिस उसे भी उठा लेगी। किसी तरह उस दोस्त को बचाने की इच्छा थी और उसके साथ मैं, इस झंझट से बाहर निकलना चाहता था। उसने इन सबका विवरण थोड़े संकोच के साथ किया।

इस समस्या का हल ढूंढने के लिए सेवानिवृत्त प्रोफेसर के पास ही जाना पड़ा। हमने प्रधानाचार्य को पूरी घटना का खुलासा किया। उन्होंने लड़की के घरवालों को फोन किया, वहां कोई फोन नहीं उठा रहा था। समय चार बज चुके थे। प्रधानाचार्य ने यह कहते हुए बात टाल दिया कि वे अगले दिन फोन करेंगे।

काम की व्यस्तता के बीच हमें यह जानकारी मिली कि वो लड़का प्रेम में बेबस होकर उस लड़की को भगा ले गया है। एक दिन अभिजीत को देखा तो उसे पास बुलाकर मैंने कहा, "यह सब एक भाग्य का खेल है। कुछ बातों को हम रोक नहीं सकते।" क्या वो मेरे उसूल को पचा पाएगा..... ?

एक बार जब अभिजीत के पापा पीटीए मीटिंग में आए तो वो उन्हें मेरे पास ले आया। उन्होंने मुझसे कहा कि "सर ये आपसे बहुत प्यार और सम्मान करता है। आप कृपया उसे

सलाह दे कि वो फालतू चीज़ों में न फसें। मेरा एकलौता बेटा है। मैं बैंक से कर्ज़ लेकर उसे पढ़ा रहा हूं। उसे अपने पैरों पर खड़ा करवाकर मुझे अपना कर्ज़ चुकाना है।"

"बच्चा है अनुभव से सीख जाएगा।" मैंने उन्हें तसल्ली दी! अभिजीत को डांडने का मौका वो कभी भी नहीं देता है। वैसे तो पढ़ाई में अच्छा है। उसके चाल-चलन में अपने दोस्तों के प्रति जो गरिमा, कुलीनता, परोपकार की भावना, वो उसमें झलकती है। इसलिए ज़्यादा सलाह मशहोरा देने की ज़रूरत भी नहीं पड़ती।

कॉलेज में सावन के महीने में वार्षिक परीक्षा आई । आखिरी परीक्षा ग्राफिक्स की थी और मैं था अभिजीत का निरीक्षक। परीक्षा शुरू होने से ठीक पहले कुछ अजीब सी विवशता में वो मुझसे मिलने आया।

"सर, मेरी तबियत कुछ ठीक नहीं है, लगता है मुझे बुखार है या मुझे चक्कर सा आ रहा है। कृपया मुझे बैठकर बनाने की अनुमति दें।"

"जरूर, फिक्र मत करो। परीक्षा हॉल में पहुँचने पर सब ठीक हो जाएगा।" मैंने उसे तसल्ली दी। परीक्षा के बाद उसका चेहरा खिल उठा।

"धन्यवाद सर, मैंने अच्छी तरह बना लिया है। अच्छे अंक से पास भी हो जाऊंगा।"

उसके पीठ को सहलाते हुए मैंने कहा "जल्दी से एक अच्छे डॉकटर को दिखाओ। घर से किसी को बुला लेते तो अच्छा होता। तो ठीक है, खुशी खुशी छुट्टियां मनाओं।"

हॉल से निकला अभिजीत फिर वापस आया। "सर जब आप त्रिशूर आएंगे तो मेरे घर ज़रूर आना, रास्ता तो पापा ने बताया ही होगा....।" हाँ, ज़रूर आऊंगा मैंने उससे वादा किया।

दो हफ्ते के बाद हमारे दोस्त लाइब्रेरियन का फोन आया।

"हमारा अभिजीत चला गया सर.....।"

मैंने एक झटके के साथ सुना और कुछ देर के लिए मेरे होश उड़ गए, जब होश आया तो मैंने पूछा।

"क्या हुआ था"?

"उसे बहुत दिनों से बुखार, सरदर्द और खांसी था। परीक्षा के कारण उसने कोई चेकअप भी नहीं करवाया था। जब उसके घुटनों का दर्द काबू से बाहर हो गया तब जाकर उसने ग्राफिक्स परीक्षा के लिए बैठकर लिखने की अनुमति ली थी।"

"कॉलेज से एक बस जा रही है, आप जंक्शन में होंगे ना....?"

एक पूरा गांव उस घर में पहुँच चुका था। हमें देखते ही वहां का माहौल और भी बिगड़ गया, एक तरफ मां और दूसरी तरफ उसके पापा अपने बेटे को गले लगाए चीक चीककर रो रहे थे।

ज्यादा देर ये सब देखने की हिम्मत मुझ में नहीं थी। भीड़ के बीच से हम निकल पड़े, उस छोटी सी गली से नीचे उतरते समय पांव लड़खड़ाने लगा और एक पत्थर पर जा लगी और खून बहने लगा।

सालों बीतने के बाद भी वो घाव का निशान आज भी ताज़ा है...।

अश्विन विजित
हष्ना पी एम का सुपुत्र

भूत

"भूत" ये नाम सुनते ही सबको डर लगता है। मैं भी अलग नहीं हूँ। सुना है, "भूत" कई प्रकार के होते हैं। अच्छा, बुरा, सुन्दर, डरावनी, प्रेत, चुड़ैल, आदि कई तरह के। मुझे भूत से बहुत डर लगता है। फिर भी भूतों की कहानियों में दिलचस्पी है। बचपन में सब भूत का नाम लेकर डराते थे। खाना नहीं खाया तो भूत आएगा, देर से सोया भूत आएगा, रात को अकेले बाहर निकला तो चुड़ैल पकड़कर ले जाएंगे ..... ऐसी कई बातें। फिर भी भूत-प्रेत की कहानियाँ सुनने में मज़ा आता है। मगर ये हकीकत में कैसे होते है इसका पता आज भी नहीं है।

ये कहानी भी एक भूत की है, जो रात के अंधेरे में मुझे पकड़ने आया था। एक काली काली रात थी। रात के बारह बजे। मैं अपने बिस्तर पर बडें चाव से चादर तान के सो रहा था। इतने में एक आवाज़ सुनाई दी। मानो कोई मुझे पुकार रहा हो । मैं ने उठकर देखा, पर वहाँ कोई नहीं था। मैं फिर सोने लगा। थोडी देर बाद फिर आवाज सुनाई दी। मैं उठा। देखा सामने एक लंबा आदमी खडा था। उसने अपने साथ चलने को कहा। आधी रात थी। मैं ने डर के मारे न कह दिया । वो चुप-चाप वहाँ से चला गया। आखिर वो था कौन? मैंने उसे पहले कभी नहीं देखा । यही सोचते-सोचते मैं नींद की और बढ़ ही रहा था, वो आदमी फिर से आ गया । वो आदमी प्यार से बाते करने लगा। कहानियाँ सुनाने लगा। कहानियाँ सुनते सुनते मैं उसके पीछे-पीछे चलने लगा। सुनसान गलियों से हम आगे जा रहे थे । वो गाना भी गा रहा था। इस काली रात में मुझे बिलकुल डर नहीं लग रहा था। इतने में मुझे उसमे चाल-चलन में गड़बड़ नजर आया। मगर क्या है कुछ समझ में नहीं आ रहा था । मैं ने ध्यान से देखा । "ये तो उलटे-पैर" चल रहा है । कहानियों में सुना था भूत उलटे -पैर चलते है । आज देख भी लिया । " बाप - रे, ये तो ब... ब...ब... भूत है"। मैं डर के मारे काँपने लगा। " मैं इतनी देर भूत के साथ चल रहा था " मैं ने वहाँ से भागने की कोशिश की, मगर पैर हिल ही नहीं रहे थे । इतने में वो रुका और पीछे मुड़ा। तब मैं ने जो देखा मेरे होश ही उड़ गए। कटा हुआ सर अपने ही हथेली में, और आँखे सर के चारों ओर घूम रही थी। शरीर चादर से ढ़का हुआ और हवा में उड़ रहा था मैं चिल्लाना चाहता था। मगर आवाज गले से नीचे उतर गयी । भागना चाहता था, मगर भाग नहीं पाया मानों पैर जमीन पर अटक गई हो। इतने में वो उड़ता हुआ आया, मेरे पैरो में पकडा और खींच कर बरगत के पेड़ की सबसे उपर वाली डाली में जा बैठा। आगे क्या बताऊँ, उसने मुझे वहाँ से नीचे फेंक दिया। मैं नीचे आ गिरा। मैं ने देखा की मैं अपने ही कमरे में जमीन पर पड़ा हूँ और आस पास कोई नहीं था । मैं ने चारों ओर देखा । सब कुछ पहले जैसे ही था । इस बीच पता नही मेरे मुँह से चीख निकली चीख सुनकर माँ आई और मुझे बुलाने लगी। जब होश आया तो पता चला कि मैं अपने बिस्तर से निचे गिरा था। और जो घटना घटी वो मात्र एक सपना था। लेकिन क्या करें डर के मारे मैं पानी - पानी हो चुका था। मेरी तो जान ही निकल गई थी । बुखार के मारे मैंने खटिया पकड़ ली । पूरा एक हफ्ता लगा बुखार उतरने में। फिर भी "भूत-प्रेत" की कहानियों में दिलचस्पी है। सुनने में मज़ा आता है और डरने में भी ...।

मुकेश शंकर एम एस
वरिष्ठ प्रबंधक

सीएसएल सांस्कृतिक अद्यतन

व्यवरोध खंडन

व्यवरोध खंडन सीएसएल की चार सांस्कृतिक दक्षताओं में से एक है। सीएसएल में प्रत्येक कर्मचारी से यह अपेक्षा की जाती है कि वह ड्यूटी पर रहते हुए इस व्यवहार को प्रदर्शित करें।

इतिहास हमें उन लोगों के बारे में सिखाता है जिन्होंने सफलता हासिल करने हेतु व्यवरोध का खंडन किया। जो शून्य से आए थे, या इससे भी बदतर, उन जगहों से जहां उनके अस्तित्व को दैनिक आधार पर खतरा था।

उन्होंने क्या किया? उन्होंने चुनौती के रूप में उसे स्वीकार कर लिया। वे कठिन अभ्यास करते थे। अपने मूल सिद्धांतों (जैसे अंत्योदय) से लगे रहते थे। अजीब चेहरों के बीच पहचान वाले कुछ चहरें, कुछ विचार विमर्श। सब कुछ एक व्यवरोध था जिसे उन्हें झेलना था। उन्होंने इसे कब्ज़े में कर लिया। इसके लिए उन्होंने कुछ खास किया। हम उनसे भी सीख ले सकते हैं।

डी जीवतरन
सहायक प्रबंधक

सामाजिक ज्ञान

समुद्री एम्बुलेंस - मत्स्य पालन विभाग, केरल

दिनांक 31 मई 2018 को केरल सरकार ने कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड के साथ मत्स्य विभाग केलिए 3 समुद्री एम्बुलेंस नावों के निर्माण केलिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए । इन बोटों को मत्स्य विभाग केलिए परिष्कृत समुद्री योग्य जहाज़ों की लंबे समय से आवश्यकता को पूरा करने हेतु अभिप्रेत है ।

नवंबर 2017 को केरल और पश्चिमी तटवर्ती राज्य विनाशकारी चक्रवात ओखी की चपेट में आ गए, जिसमें 143 लोगों की जान चली गई। 52 मरे और 91 लापता होने के साथ मछुआरा समुदाय सबसे अधिक प्रभावित हुए। स्थानीय मछुआरों की मछली पकडनेवाली नावों के उपयोग से बचाव के प्रयास किए गए जिसमें इस तरह के प्रचालन केलिए आवश्यक परिष्करण का अभाव था। गश्त, तलाशी और बचाव अभियान और एम्बुलेंस सहायता के संचालन केलिए जहाज़ की कमी को गंभीर रूप से महसूस किया गया। इसके लिए केरल सरकार ने 3 एम्बुलेंस नावों का अधिग्रहण करने का निर्णय लिया, जिसके लिए सीएसएल को आदेश दिया गया था । एम्बुलेंस नावों को मत्स्य-स्थल, तलाशी और बचाव कार्यों में गश्त करने और केरल के तटीय जल सहित जहाज़ पर चिकित्सा सहायता प्रदान करने हेतु उपयोग करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। प्रमुख बंदरगाहों पर केरल के तट के साथ 3 स्थानों पर नौकाओं को तैनात किया जाएगा। एम्बुलेंस नाव संकट में फंसे मछुआरों को 24X365 संचालन सेवा प्रदान करेगी और 14 समुद्री मील की गति से 2 घंटे सहित प्रति दिन 8 घंटे तक गश्त करने में सक्षम होगी।

जहाज़ तीन रोगियों का इलाज करने में सक्षम होगा और इसमें पैरामेडिकल कर्मचारी सहित 7-10 चालक दल होंगे। एम्बुलेंस

नाव में विभिन्न पैरामेडिकल सुविधाएं जैसे उपचर्या कक्ष, जाँच कक्ष, चिकित्सा बेड, स्ट्रेचर, मुर्दाघर फ्रीज़र और चिकित्सा लॉकर आदि भी थीं। यह जहाज़ संकटग्रस्त स्थान से मछली पकड़ने के जहाज़ जैसे अन्य जहाज़ों को भी ढोने में सक्षम है। मत्स्य विभाग ने कुशल ईंधन उपयोग वाले जहाज़ की मांग की। बिजली की आवश्यकता को अंतिम रूप देने हेतु, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मद्रास में हल का नमूना परीक्षण किया गया। बिजली की आवश्यकता को कम करने हेतु दो ईंधन बचत उपांगों का भी परीक्षण किया गया। स्टर्न वेज डिज़ाइन गति पर 10% बिजली की आवश्यकता को कम करने हेतु साबित हुआ और डिज़ाइन में अपनाया गया।

आईआईटी से नमूना जाँच के परिणामों सहित, मूल डिज़ाइन टीम ने जहाज़ के लिए प्रणोदन शक्ति की आवश्यकता को अंतिम रूप दिया। इसके साथ ही सीएसएल के डिज़ाइन विभाग ने वर्ग अनुमोदन और निर्माण के लिए संपूर्ण डिज़ाइन तैयार किया। जहाज़ की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

1. 14 समुद्री मील की अधिकतम गति प्राप्त करने हेतु अनुकूलित हल रूप ।
2. गंभीर समुद्री परिस्थितियों का सामना करने हेतु स्टील का हल ।
3. जहाज़ के वज़न को कम करने और आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं को समायोजित करने हेतु एफआरपी अधिरचना।
4. जहाज़ की स्थिरता आईएस कोड 2008 का अनुपालन करती है।
5. बचाव और मरीज़ सेवा के लिए बेहतर समुद्री रखरखाव और कुशलता निष्पादन।
6. चालक दल, चिकित्सा कर्मचारियों, रोगियों और चिकित्सा सुविधाओं के लिए आवास।
7. जहाज़ संचालन में ईंधन दक्षता के लिए अनुकूलतम होना।
8. 4 दिनों की मज़बूती के लिए प्रतिदिन 8 घंटे के लिए डिज़ाइन किया गया।
9. बायो-टॉयलेट का उपयोग जहाज़ पर किया जाता है जो पर्यावरण के अनुकूल है, सीवेज की समस्या और शौचालय में पानी की खपत को भी कम करता है।
10. आपातकालीन उद्देश्यों के लिए मज़बूत डीज़ल चालित अग्निशमन पंप भी लगाया गया।
11. उन्नत पोत निर्माण / समुद्री निर्माण और पेंटिंग तकनीक।
12. ईको साउंडर, जीपीएस, वीएचएफ, एआईएस, वीएचएफ सहित डीएससी, एक्स-बैंड रडार, एआईएस क्लास बी, नेवटेक्स रिसीवर, एसएआरटी, ईपीआईआरबी, मैग्नेटिक कंपास, नेविगेशनल लाइट, ऑल राउंड सर्च लाइट से सज्जित।

डिज़ाइन क्षमताएं

★ समुद्र की स्थिति में 4 मीटर तक की लहर की ऊंचाई तक संचालित करना और समुद्र की स्थिति में 5 मीटर तक गंभीर समुद्री स्थिति में जीवित रहने में सक्षम होना।

★ समुद्र से मत्स्य-ग्रहण के जहाज़ जैसे समान रूप के अन्य जहाज़ को ढोने में सक्षम।

★ बचाव जाल- जेसण्स क्रेडल एक बहुमुखी कार्मिक पुनर्प्राप्ति उपकरण है जिसे बचाव कार्यों के लिए जहाज़ के चारों ओर 4 स्थानों पर फिट किया जाता है। यह जहाज़ को जहाज़ पर से बचाव कार्य करने में सक्षम बनाता है।

★ फ्रीज़र मुर्दाघर को सुरक्षित करने हेतु मृत शरीर को ले जाने वाला सक्षम कक्ष।

★ प्राथमिक चिकित्सा प्रदान करने और रोगियों का इलाज करने हेतु उन्नत चिकित्सा सुविधाएं जैसे प्राथमिक चिकित्सा किट, लॉकर, डिफाइब्रिलेटर, ऑक्सीजन सिलेंडर, सक्शन पंप, कैनवास स्ट्रेचर और अन्य आवश्यक चिकित्सा आपूर्ति।

★ चिकित्सा कर्मचारी के लिए मेज़ और कुर्सी, मरीज़ों के लिए 3 बेड, दवा के भंडारण के लिए चिकित्सा लॉकर के साथ प्रदान किया गया उपचर्या कक्ष। 1 समायोज्य जाँच बेड के साथ प्रदान किया गया जाँच कक्ष।

★ चार लोगों के चालक दल के आवास के लिए 2 टू टायर बेड, 2 लॉकर, सोफा और मेज़ प्रदान किया गया है। खाना पकाने की ज़रूरतों के लिए ऑवन, गर्म प्लेट और रेफ्रिजरेटर सहित एक गैली भी प्रदान की जाती है।

★ 2 डीजी सहित शत-प्रतिशत व्यर्थ बिजली आपूर्ति और नौचालन व चिकित्सा उपकरणों हेतु आपातकालीन बैटरी बैकअप।

लिंडा गोडली
निर्मल टॉम एन
की सुपत्नी

सामाजिक जागरूकता

आगे क्या..?

एक फड़फड़ाती पंतग का लक्ष्य असीमित ऊंचाइयों को छूना है, जैसे कि वह दुनिया को अपने में समेटना चाहता हो। लेकिन जिस क्षण नन्हें सैम ने पतंग को वापस खींचा, टीना को किसी के द्वारा नियंत्रित होने का एहसास होता है। जिस तरह से उसने धागे को पीछे की ओर घुमाया, टीना को ऐसा लगा मानो, उसने उस छोटे से अजीब टुकड़े के लक्ष्य को काट दिया हो।

अपने ख्यालों में उलझी टीना को उस जकड़े हुए पतंग को देखकर टूटे हुए सपनों के प्रतीक के रूप में नज़र आया। इसकी वर्तमान नाज़ुकता उसकी दुविधाओं से मिलती-जुलती है जिसने उसके निर्णयों को रोक दिया। जिस तरह से यह अपने में ही सिमट जाता है, वह पारिवारिक और सामाजिक पाबंदियों की झुंझलाहट और घुटन को दर्शाता है - जो उसके जीवन को घेर लेती है।

उसे डर था कि अगर ये सामाजिक पाबंदियां उसकी परछाई पर टिकी रहीं तो उसका अमरिका प्रवास का सपना बेकार हो सकता है। जैसे ही वह अपनी आँखें बंद करती है, तो वह समाज के गर्जन को महसूस करते हुए अपनी क्षमता को शून्य की ओर धकेल देती है।

क्या 25 साल की लड़की के लिए शादी ही एकमात्र विकल्प है? सफलता की एकमात्र कुंजी है? नहीं ।

तो आगे क्या...???

हमारा भारतीय संविधान स्वतंत्रता के अधिकार का एहसास दिलाता है। यह अवधारणा अनुच्छेद 19-22 में शामिल है। फिर भी हमारे लोग आत्म-प्रतिबद्धताओं के बजाय सामाजिक-प्रतिबद्धताओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं। वर्तमान में, सकारात्मक आवेग प्रदान करने वाले एक कुशल समाज की स्थापना करना, तनाव मुक्त और आत्मविश्वासी नागरिको को जन्म देना, यह महान लेखक थॉमस मोरे की 'यूटोपिया" का सपना देखना जैसा है।

हमारे सपनों के समाज को प्राप्त करने का तरीका सच में सादा और पारदर्शी है। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने लक्ष्य के रूप में अपने स्वयं के दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित करता है, तो यह एक नए युग की शुरुआत का पूर्वाभास देता है। इस प्रकार, हमारी आनेवाली पीढ़ी को हमेशा के लिए आगे बढ़ने हेतु हमारे वर्तमान उदास माहौल को मिटा दिया जा सकता है।

अलीना नीतू साबिन
लेखाकार

लाजवाब ज़ायका

पनीर उणियप्पम

सामग्री

अरवा चावल	- 1 कटोरी
गुड पाउडर	- 1 कटोरी
नारियल छिला हुआ	- 1/2 कटोरी
केला	- 2
इलाइची पाउडर	- 1 छोटी चम्मच
घी	- 3 छोटी चम्मच
पनीर	- 100 ग्राम (बारीक कटा हुआ)
तेल	- ज़रूरत के अनुसार
नमक	- 1/2 छोटी चम्मच

बनाने की विधि

अरवा चावल को 2 घंटे भिगोकर रखने के बाद उसे अच्छी तरह से पीस ले।
उसमें गुड़, नारियल और केला डालकर बेटर बना ले।
इस बेटर में आवश्यकतानुसार नमक डाले।
एक पान में घी डाले और बारीक कटा हुआ पनीर अच्छी तरह से भुन ले।
इसके बाद, अप्पम के बेटर में भुना हुआ पनीर, घी और इलायची पाउडर मिला ले।
अब गैस पर उणियप्पम बनाने का पान रखे, और इसमे आवश्यकतानुसार तेल डाले।
फिर चम्मच की मदद से उणियप्पम का बेटर धीरे से डाले और धीमी आंच में पकाए।
स्वादिष्ट पनीर उणियप्पम तैयार .....।

लीला पी वी
वैशाख के वी की मां

चाँदनी रात

तू मेरे पास न हो, पर
तेरे दिल की धड़कन की आवाज़
मेरे कानों में आकर चिल्लाता है ।
चाँदनी रात, तारों से बनी आसमान...
हाँ, मै बिलकुल इंतजार करुँगी
तेरी वापसी के लिए और तेरे
साथ होनेवाली अनेक चाँदनी रात
केलिए भी ।

अश्वती के वी
वैशाख के वी की बहन

पृथ्वी का बदला

हमने पेडों को काटा और
वहाँ हमने इमारतें बनाई ।
हमने जानवरों को मार डाला
और खा गए ।
हमने बहता हुआ दर्पण जैसे
नदी से खनन रेता ।
हमने पहाडों को समतल किया
और वहाँ उद्योग बनाए ।
कई जीवित चीज़ें शरण लेती
धरती पर हम ने बम डाला ।
कई सालों तक सब कुछ हुआ
लेकिन अब धरती हर चीज़ का
बदला ले रही है ।

मोहम्मद शालू रहमान
परियोजना सहायक

आज़ाद परिंदे

"ये नभ के आज़ाद परिंदे,
तू क्यों इतना इतराता है"
कभी इस डाल पर कभी उस डाल पर
पंख अपने फर फराता है
कभी उड़कर ऊपर,
कभी नीचे आ जाता है
"ये नभ के आज़ाद परिंदे,
तू क्यों इतना इतराता है"
सुबह - सुबह उठ दाना लाने
फिर नभ मे उड़
शाम को वापस अपने घर
फिर दाना लेकर आता है
खुद भूखे रह,
बच्चो को दाना वही खिलाता
"ये नभ के आज़ाद परिंदे,
तू क्यों इतना इतराता है"

देख कर तेरे होसलों को
मन प्रफुल्लित हो जाता है
तुझे देख कर मन में मेरे
एक उमंग-सा जग जाता है
मै भी उड़ूँगा होसलों के पंख लगा कर,
तू सीख यही सिखलाता है
"ये नभ के आज़ाद परिंदे,
तू क्यों इतना इतराता है"

सुजीत एस
वरिष्ठ शिप ड्राफ्ट्समैन

कोरोना

हे कोरोना तू भी ना, क्या अनोखी चीज़ है।
कोई न सोचा होगा, सपना न देखा होगा।
ऐसा भी दिन आएगा, घर पर बैठकर खाएगा।
हे कोरोना तू भी ना, क्या अनोखी चीज़ है।

चीन के गोद में जन्म लिया, हर दुनिया को धमकी दिया।
सात समंदर पार किया, सारे संसार में छा गया।
हे कोरोना तू भी ना, क्या अनोखी चीज़ है।
हर गाड़ी को रोक दिया, प्रदूषण को दूर किया।
फिर भी तू चलता रहा, सारा संसार घबरा गया।
हे कोरोना तू भी ना, क्या अनोखी चीज़ है।

किसी को नहीं छूट दिया, पुलिस हो या डाकू।
हर किसी को छुट्टी दिया, स्कूल हो या कॉलेज।
हे कोरोना तू भी ना, क्या अनोखी चीज़ है।
कोरोना से डरो ना, अपनी प्रतिरक्षा बढ़ाओ।
हर किसी से दूरी रखे, कोरोना से दूर रहो।
हे कोरोना तुमको ना, याद बना देंगे हम मिलकर।
स्वच्छता में सुधार लाओ, कोरोना को दूर रखो।
साथ में पहनो मुखौटा, रोको इसका फैलाव।
हे कोरोना तुमको ना, याद बना देंगे हम मिलकर।

अरुण आर
स्टोर कीपर

माई का प्रेम

एक गाँव मे एक बूढ़ी माई रहती थी। माई का आगे-पीछे कोई नही था इसलिए बूढ़ी माई बेचारी अकेली रहती थी। एक दिन उस गाँव मे एक संत आए। बूढ़ी माई ने महात्मा जी का बहुत ही प्रेम पूर्वक आदर - सत्कार किया । जब महात्मा जी जाने लगे तो बूढ़ी माँ ने कहा - "महात्मा जी! आप तो ईश्वर के परम भक्त है। कृपा करके मुझे ऐसा आशीर्वाद दीजिए जिससे मेरा अकेलापन दूर हो जाए अकेले रह - रह के ऊब चूकी हूँ"। तब महात्मा ने मुस्कराते हुए अपनी झोली में से बाल-गोपाल की एक मूर्ति निकाली और कहा -"माई ये लो आपका बालक और इसको अपने बच्चों की तरह प्रेम पूर्वक लालन - पालन करती रहना"। बुढ़िया माई बड़े लाड़-प्यार से ठाकुर जी का लालन-पालन करने लगी। एक दिन गाँव के कुछ शरारती बच्चों ने देखा कि माई मूर्ती को अपने बच्चे की तरह लाड़ प्यार कर रही है। नटखट बच्चों को माई से हंसी - मज़ाक करने की सूझी। उन्होंने माई से कहा - "अरी मैय्या सुनो, गाँव में जंगल से एक भेडिया घुस आया है जो छोटे बच्चों को उठाकर ले जाता है और मारकर खा जाता है। तू अपने लाल का ख्याल रखना कहीं भेड़िया इसे उठाकर ना ले जाये। बुढ़िया माँ ने अपने बाल-गोपाल को उसी समय कुटिया मे विराजमान किया और स्वयं लाठी लेकर द्वार पर पहरा लगाने के लिए बैठ गयी। अपने लाल को भेड़िया से बचाने के लिए बुढ़िया माई भूखी प्यासी द्वार पर पहरा देती रही। पहरा देते - देते एक दिन बीता, फिर दूसरा, तीसरा, चौथा और पाचवां दिन बीत गया। बुढ़िया माई की भोली भाली मैया का यह भाव देखकर ठाकुर जी का हृदय प्रेम से भर गया।

माई अपने बाल को ठाकुर जी करके प्रेम से पुकारती थी तब ठाकुर जी को मैया के प्रेम का प्रत्यक्ष रूप से आस्वादन करने की इच्छा हुई।

भगवान बहुत ही सुन्दर रूप धारण कर माई के पास आए ठाकुर जी की पाँव की आहट सुनकर माई डर गई कि "कहीं दुष्ट भेड़िया तो नहीं आ गया, मेरे लाल को उठाने"। माई ने लाठी उठाई और भेड़िया को भगाने के लिए उठ खड़ी हुई। तब भगवान कहता है - मैय्या मै हूँ तेरा बालक, जिसकी तुम रक्षा करती हो। माई ने कहा - "क्या चल हट तेरे जैसे बहुत देखे है। चल भाग जा यहाँ से.." यह देखकर भगवान बहुत ज्यादा प्रसन्न हो गये। अरी मेरी मैय्या, मैं त्रिलोकीनाथ भगवान हूँ, मुझसे चाहे आप वर मांग ले, में तेरी भक्ति से प्रसन्न हूँ। बुढ़िया माई ने कहा - "अच्छा आप भगवान हो, मैं आपको सौ– सौ प्रणाम करती हूँ। कृपया आप मुझे यह वरदान दीजिए कि मेरे प्राण - प्यारे लाल को भेड़िया न ले जाए।" अब भगवान और ज़्यादा प्रसन्न हुए बोले - चल माई मैं तुझे अपने साथ ले चलता हूँ वहाँ भेड़िया का कोई भय नहीं है। इस तरह भगवान माई को अपने धाम ले आए। भगवान को पाने का सबसे सरल मार्ग है - भगवान को प्रेम करो। हमें अपने अन्दर बैठे ईश्वरीय अंश को काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार रूपी भेड़ियों से रक्षा करनी चाहिए। जब हम पूरी तरह अपनी पवित्रता और शांति की दुआ करते हैं तो एक दिन ईश्वर हमें दर्शन ज़रूर देते है।

कोविड 19

नीतू पी के
आउटफिट सहायक

प्रस्तावना: विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरान वायरस को महामारी घोषित कर दिया है। कोरोना वायरस बहुत सूक्ष्म लेकिन प्रभावी वायरस है। कोरोना वायरस मानव के जान की तुलना में 900 गुना छोटा है, लेकिन कोरोना का संक्रमण दुनियाभर में तेज़ी से फैल रहा है।

कोरोना वायरस क्या है?

कोरोना वायरस का संबंध वायरस के ऐसे परिवार से है जिसके संक्रमण से जुकाम से लेकर सांस लेने मे तकलीफ जैसी समस्या हो सकती है। इस वायरस को पहले कभी नहीं देखा गया है। इस वायरस का संक्रमण दिसंबर में चीन के वुहान मे शुरू हुआ था। डब्ल्यूएचओ के मुताबिक बुखार, खांसी, सांस लेने में तकलीफ इसके लक्षण है। अब तक इस वायरस को फैलने से रोकने वाला कोई टीका नहीं बना है। इसके संक्रमण के फलस्वरूप बुखार, जुकाम, सांस लेने में तकलीफ, नाक बहना और गले में खराश जैसी समस्याएं उत्पन्न होती है। यह वायरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है । इसलिए इसे लेकर बहुत सावधानी बरती जा रही है। यह वायरस दिसंबर में सबसे पहले चीन की पकड में आया था। इसके दूसरे देशों में पहुंच जाने की आशंका जताई जा रही है।

कोरोना से मिलते-जुलते वायरस खांसी और छींक से गिरने वाली बूँदों के ज़रिए फैलते है। कोरोना वायरस अब चीन में उतनी तीव्र गति से नहीं फैल रहा है जितना दुनिया के अन्य देशों में फैल रहा है। कोविड नाम का यह वायरस अब तक 70 से ज़्यादा देशों में फैल चुका है। कोरोना के संक्रमण के बढ़ते खतरे को देखते हुए सावधानी बरतने की ज़रूरत है ताकि इसे फैलने से रोका जा सके।

क्या हैं इस बीमारी के लक्षण?

कोविड-19/कोरोना वायरस में पहले बुखार होता है। इसके बाद सूखी खांसी होती है और फिर एक हफ्ते बाद सांस लेने में परेशानी होने लगती है।

इन लक्षण का हमेशा मतलब यह नहीं है कि सभी को कोरोना वायरस का संक्रमण है। कोरोना वायरस के गंभीर मामलों में निमोनिया, सांस लेने में बहुत ज़्यादा परेशानी, किडनी फेल होना और यहां तक कि मौत भी हो सकती है। बुजुर्ग या जिन लोगों को पहले से अस्थमा मधुमेह या दिल की बीमारी है उनके मामले में खतरा गंभीर हो सकता है। जुकाम और फ्लू वायरस में भी इस तरह के लक्षण पाए जाते है।

कोरोना वायरस का संक्रमण हो जाए तब?

इस समय कोरोना वायरस को कोई इलाज नहीं है लेकिन इसमें बीमारी के लक्षण कम होने वाली दवाइयां दी जा सकती है। जब तक आप ठीक न हो जाएं, तब तक आप दूसरों से अलग रहे। कोरोना वायरस के ईलाज के लिए टीका विकसित करने पर काम चल रहा है। इस साल के अंत तक इंसानों पर इसका परीक्षण कर रहे है।

क्या हैं इससे बचाव के उपाय?

स्वास्थ्य मंत्रालय ने कोरोना वायरस से बचने के लिए दिशा-निर्देश जारी किए है। इनके मुताबिक हाथों को साबुन से धोना चाहिए। अलकोहल आधारित हैंड रब का इस्तेमाल भी किया जा सकता है। खांसते और छींकते समय नाक और मुंह रूमाल या टिश्यू पेपर से ढक्कर रखें। जिन व्यक्तियों में जुकाम और फ्लू के लक्षण हों, उनसे दूरी बनाकर रखें, अंडे और मांस के सेवन से बचें और जगंली जानवरों के संपर्क में आने से बचें।

मास्क कौन और कैसे पहनें?

अगर आप स्वस्थ हैं तो आपको मास्क की जरूरत नहीं है। अगर आप किसी कोरोना वायरस से संक्रमित व्यक्ति की देखभाल कर रहे है, तो आपको मास्क पहनना होगा । जिन लोगो को बुखार, कफ या सांस में तकलीफ की शिकायत है, उन्हें मास्क पहनना चाहिए और तुरंत डॉक्टर के पास जाना चाहिए।

मास्क पहनने का तरीका:-

★ मास्क पर सामने से हाथ नहीं लगाना चाहिए।

★ अगर हाथ लग जाए तो तुरंत हाथ धोना चाहिए।

★ मास्क को ऐसे पहनना चाहिए कि आप का नाक, मुंह और दाढ़ी का हिस्सा उससे ढके रहे।

★ मास्क उतारते वक्त भी मास्क की प्लास्टिक या फीता पकड़कर निकालना चाहिए, मास्क नहीं छूना चाहिए।

★ हर रोज़ मास्क बदलना चाहिए।

कोरोना का खतरा कैसा करें कम, पढ़े उपाय

कोरोना से मिलते – जुलते वायरस खांसी और छींक से गिरने वाली बुंदों के ज़रिए फैलते है। अपने हाथ अच्छी तरह धोएं। खांसते या छींकते वक्त अपना मुहँ ढंक ले। हाथ साफ नहीं हो तो आंखों, नाक और मुंह को छूने से बचे ।

कोरोना का संक्रमण फैलने से कैसे रोकें?

सार्वजनिक वाहन जैसे, बस, ट्रेन, ऑटो या टैक्सी से यात्रा न करें। घर में मेहमान न बुलाएं। घर का सामान किसी और से मंगाएं। कार्यालय, स्कूल या सार्वजनिक जगहों पर न जाएं। अगर आप और भी लोगों के साथ रहे है, ता ज़्यादा सतर्कता बरते। अलग कमरे में रहें और साझा रसोई व बाथरूम को लगातार साफ करें।

14 दिनों तक ऐसा करते रहें ताकि संक्रमण का खतरा कम हो सके।

उपसंहार : लगभग 18 साल पहले सार्स वायरस से भी ऐसा ही खतरा बना था। 2002-03 में सार्स की वजह से पूरी दुनिया में 700 से ज्यादा लोगों की मौत हुई थी। पूरी दुनिया में हजारों लोग इससे संक्रमित हुए थे। कोरोना वायरस के बारे में अभी तक इस तरह के कोई प्रमाण नहीं मिले है कि कोरोना वायरस पार्सल, चिट्ठियों या खाने के ज़रिए फैलता है।

विश्व स्वास्थ संगठन, पब्लिक हेल्थ इंग्लैंड और नेशनल हेल्थ सर्विस (एन एच एस) से प्राप्त सूचना के आधार पर हम आपके कोरोना वायरस से बचाव के तरीके बता रहे है। एयरपोर्ट पर यात्रियों की स्क्रीनिंग हो या फिर लैब में लोगों की जांच, सरकार ने कोरोना वायरस से निपटने के लिए कई तरह की तैयारी की है। इसके अलावा किसी भी तरह की अफवाह से बचने, खुद की सुरक्षा के लिए कुछ निर्देश जारी किए है, जिससे की कोरोना वायरस से निपटा जा सकता है।

हिंदी पखवाड़ा समारोह

सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता तथा उसके प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से हर वर्ष सितंबर महीने में कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा मनाया जाता है। कोचीन शिपयार्ड में हिंदी पखवाड़ा समारोह का उद्घाटन दिनांक 14 सितंबर 2020 को श्री मधु एस नायर, अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक ने दीप प्रज्वलन के साथ किया। जिसमें निदेशक (प्रचालन) श्री सुरेष बाबु एन वी, निदेशक (तकनीकी) श्री बिजोय भास्कर, निदेशक (वित्त) श्री जोस वी जे, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. व प्रशि.) श्री रमेष के जे, मुख्य महाप्रबंधक (तकनीकी) श्री मुरुगय्या एम व सहायक महाप्रबंधक (प्रशा.) श्री संपत्तकुमार पी एन भी उपस्थित थे। इसके साथ ही श्री मधु एस नायर द्वारा वर्ष 2019-2020 की हिंदी गृह पत्रिका "सागर रत्न" का विमोचन कर निदेशक (प्रचालन) श्री सुरेष बाबु एन वी को सौंपा गया। कार्यक्रम का शुभारंभ श्री संपत्तकुमार पी एन द्वारा पोत परिवहन राज्य मंत्री श्री मनसुख लाल मांडविया का संदेश पढ़ते हुए किया गया। श्री मधु एस नायर जी के अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी नवीनतम गतिविधियों की सराहना की और आगे भी इस प्रकार के अत्याधुनिक तरीकों से राजभाषा का प्रचार जारी रखने का संदेश दिया गया।

कर्मचारियों, कार्यपालक प्रशिक्षार्थियों, प्रशिक्षार्थियों केलिए इस वर्ष सभी कार्यक्रम समान रूप से किया गया। हिंदी टंकण, श्रुतलेखन, गद्यांश वाचन, स्मृति परीक्षा, हिंदी फिल्म गीत (महिला और पुरुषों केलिए अलग - अलग) और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं । निबंध लेखन, वाक्य रचना, कविता लेखन, लघु कथा लेखन आदि ऑनलाइन मोड़ पर आयोजित की गई ।

ऑनलाइन विशेष कार्यक्रम – स्कूली छात्रों के लिए सरकारी स्कूल – भाषण प्रतियोगिता

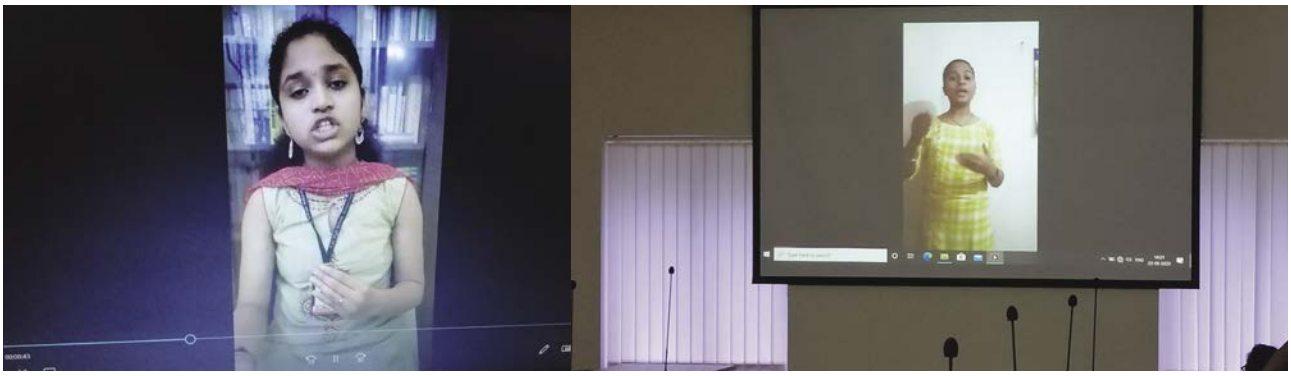

हिंदी पखवाड़ा समारोह के सिलसिले में एर्णाकुलम जिले के राज्य सरकारी स्कूलों के बच्चों के लिए ऑनलाइन भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें कुल आठ स्कूलों से नामांकन प्राप्त हुआ। दिनांक 22.09.2020 को ऑनलाइन तरीके से भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रथम स्थान पर टीडीएचएस मट्टानचेरी स्कूल की अनन्या एस, दूसरे स्थान पर फातिमा गर्ल्स हाई स्कूल, फोर्ट कोच्ची की मृदुला वी बी और तीसरे स्थान पर दारुल उलूम पुल्लेपड़ी की हीरा यू और जीवीएचएसएस चोट्टानिक्करा की देविका डी नायर पहुँची। विजेताओं को प्रथम पुरस्कार ₹5000/-, द्वितीय पुरस्कार ₹4000/- और तृतीय पुरस्कार ₹3000/- तथा प्रमाणपत्र और ट्रॉफी दिया गया।

भाषण प्रतियोगिता – विजेताएं

प्रथम पुरस्कार

अनन्या एस
टीडीएचएस
मट्टानच्चेरी

द्वितीय पुरस्कार

मृदुला वी बी
फातिमा गर्ल्स हाई स्कूल
फोर्ट कोच्ची

तृतीय पुरस्कार

देविका डी नायर
जीवीएचएसएस
चोटानिक्करा

तृतीय पुरस्कार

हीरा यू
दारुल उलूम
पुल्लेपड़ी

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता – विजेताएं

प्रथम पुरस्कार

निशांत कुमार
नेवी चिल्ड्रेन स्कूल,
कोच्ची

द्वितीय पुरस्कार

ईशा ए पै
बीवीएम
गिरिनगर

तृतीय पुरस्कार

ऑस्टिन लाज़र परमेल
बीवीएम
एलमक्करा

सीबीएसई स्कूल – प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

हिंदी पखवाड़ा समारोह के सिलसिले में एर्णाकुलम जिले के सीबीएसई स्कूलों के बच्चों के लिए ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें कुल छह स्कूलों से नामांकन प्राप्त हुआ। दिनांक 29.09.2020 को ऑनलाइन तरीके से प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रथम स्थान पर नेवी चिल्ड्रन स्कूल, कोच्ची के निशांत कुमार, दूसरे स्थान पर बी वी एम गिरिनगर की ईशा ए पाई, तीसरे स्थान पर बी वी एम एलमक्करा के ऑस्टिन लाज़र परमेल पहुँचे। विजेताओं को प्रथम पुरस्कार ₹5000/-, द्वितीय पुरस्कार ₹4000/- और तृतीय पुरस्कार ₹3000/- तथा प्रमाणपत्र और ट्रॉफी दिया गया।

हिंदी कार्यशाला

अप्रैल - जून तिमाही का एक दिवसीय कार्यशाला दिनांक 30.06.2020 (मंगलवार) को मुख्य कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में ऑनलाइन तरीके से आयोजित की गई। सभी 20 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से कार्यशाला में भाग लिया और अपनी प्रतिक्रिया भी व्यक्त की।

जुलाई - सितंबर तिमाही का एक दिवसीय कार्यशाला दिनांक 12.08.2020 (बुधवार) को मुख्य कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में ऑनलाइन तरीके से आयोजित की गई। सभी 25 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से कार्यशाला में भाग लिया।

अक्तूबर - दिसंबर तिमाही का एक दिवसीय कार्यशाला दिनांक 11.11.2020 (बुधवार) को मुख्य कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में ऑनलाइन तरीके से आयोजित की गई। सभी 20 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से कार्यशाला में भाग लिया ।

जनवरी - मार्च तिमाही का एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला दिनांक 18.02.2021 (गुरुवार) को पोत मरम्मत कार्यालय के सुरक्षा प्रशिक्षण केंद्र में आयोजित की गई। कार्यशाला में नामित सभी भागीदारों ने इस कार्यक्रम को शत-प्रतिशत सफल बनाया। कुल मिलाकर 26 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

रोज़गार अवसर – वेबिनार

कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड द्वारा दिनांक 23.02.2021 (मंगलवार) को महाराजास कॉलेज, एर्णाकुलम के स्नातक हिंदी छात्रों के लिए हिंदी भाषा के प्रति एक अवबोध एवं रोज़गार के अवसर संबंधी जानकारी हेतु 'हिंदी स्नातक के छात्रों केलिए रोज़गार अवसर' पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य संकाय श्री संपत्त कुमार पी एन, सहायक महाप्रबंधक (प्रशासन), सीएसएल, कोच्ची थे।

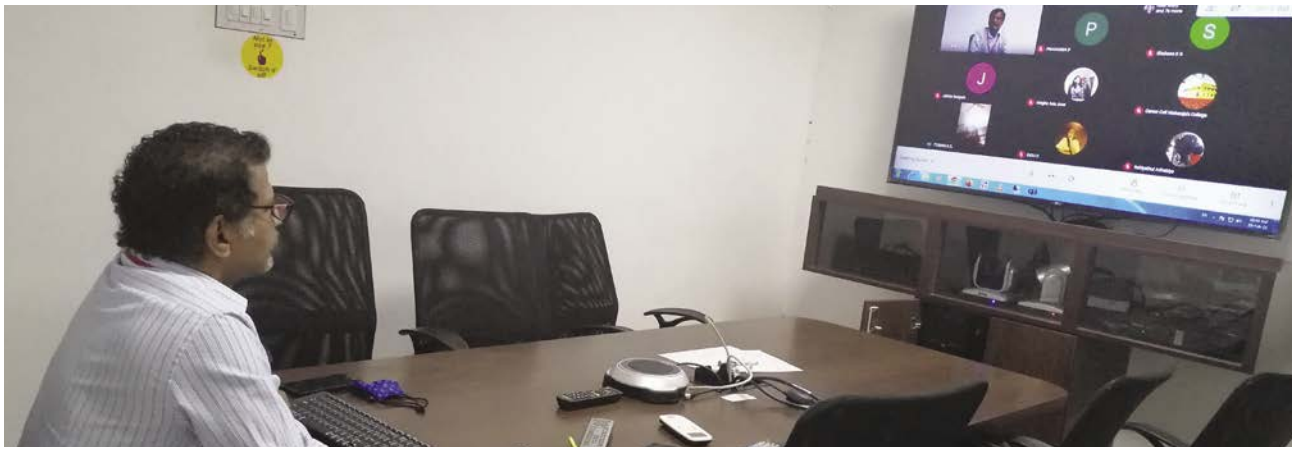

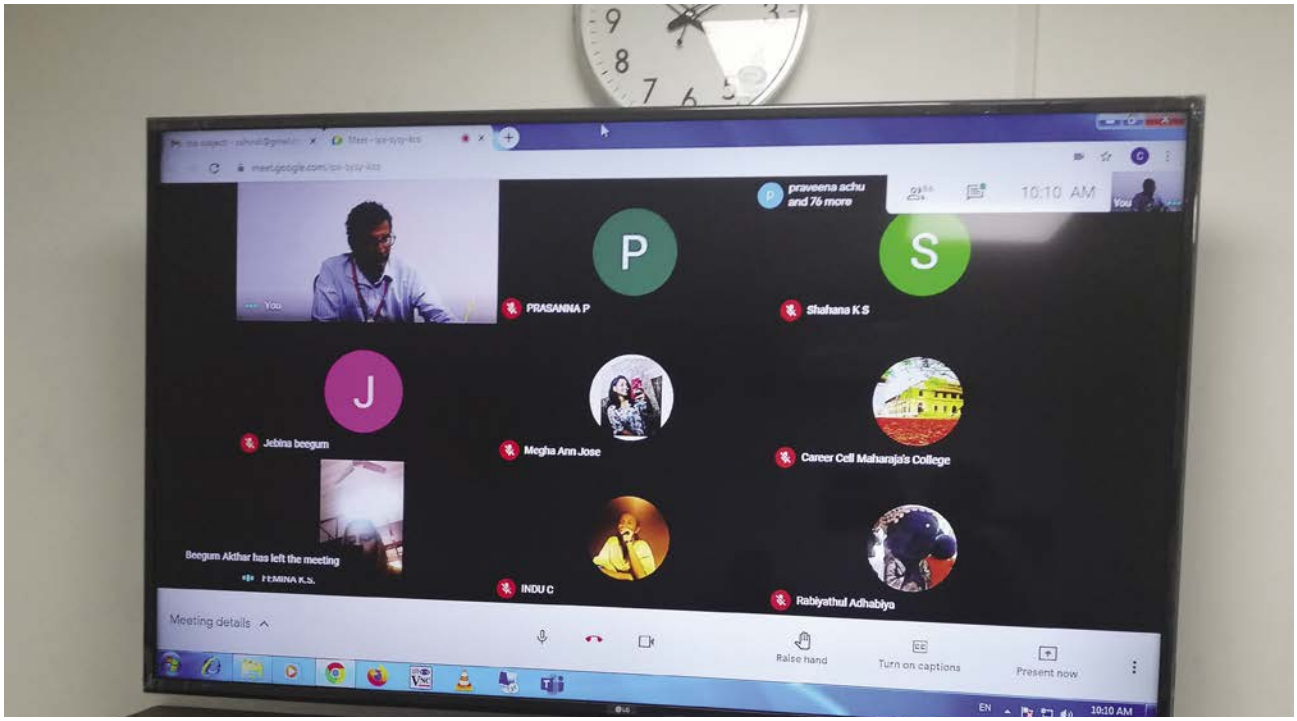

कुल मिलाकर 100 से अधिक छात्रों ने ऑनलाइन तरीके से वेबिनार में पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। इस वेबिनार का मुख्य उद्देश्य छात्रों को आगे बढ़ने हेतु हिंदी से जुड़े अवसरों के बारे में अवबोध कराना है। श्री संपत्त कुमार जी ने बड़े ही रोचक ढ़ंग से सत्र को आगे बढ़ाया गया। पहले हिंदी भाषा की सार्थकता, उसका विकास फिर संविधान में हिंदी की मान्यता आदि को छूते हुए हिंदी भाषा के पाठ्यक्रमों पर प्रकाश डाला गया। हिंदी भाषा में निहित रोज़गार संवर्धन अवसरों की झलक दिखाई गई। हिंदी भाषा के विविध आयामों को छूते हुए उसकी उन्नति और प्रचार पर विशेष ज़ोर डाला गया। छात्रों की सक्रिय भागीदारी से कार्यक्रम बहुत ही सफल रहा।

राजभाषा संदेश

राजभाषा प्रबंधन कार्यक्रम

कार्यपालकों के बीच राजभाषा प्रबंधन के संबंध में एक अवबोध सृजित करने के उद्देश्य से दिनांक 03 फरवरी 2021 को उप महाप्रबंधक से वरिष्ठ प्रबंधक के स्तर तक के कार्यपालकों केलिए एक राजभाषा प्रबंधन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। श्रीमती पापिया चाटर्जी, सहायक प्रबंधक, नेशनल इंश्यूरेंस कंपनी ने कक्षा का संचालन किया। उन्होंने बड़े रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक तरीके से राजभाषा अधिनियम, नियम और तत्संबंधी विभिन्न गतिविधियों पर प्रकाश डाला। हिंदी की प्रमुखता को बताते हुए संविधान में हिंदी के दर्जे को छूते हुए राजभाषा तक की यात्रा का सफल चित्रण किया, साथ ही, कार्यालय में राजभाषा हिंदी के महत्व, राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति कार्यपालकों का उत्तरदायित्व, राजभाषा नीति, वार्षिक

कार्यक्रम आदि सभी बिंदुओं पर भी उन्होंने प्रकाश डाला। राजभाषा संबंधी प्रावधानों को छोटा- छोटा नुस्का बनाकर प्रस्तुतीकरण के माध्यम से पेश किया गया। कार्यालय में कार्यपालकों को किस प्रकार अपने सहकर्मियों को राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रोत्साहित करना है इस पर भी विचार किया गया। आगे बढ़ते हुए उन्होंने हिंदी भाषा के व्याकरण से सभी भागीदारों को अवगत कराया। लिंग पहचानने के कुछ सरल तरीकों को समझाया। रोचक कार्यशीटों से भागीदारों को कुछ समय के लिए व्यस्त रखा। सभी भागीदारों को अपना काम हिंदी में करने हेतु प्रेरित किया गया। भागीदारों ने इस संबंध में अनेक प्रश्नों को उठाया जिसका सफल हल निकाला गया। सभी प्रतिभागियों ने अपने मन की बात बताई और यह विश्वास दिलाया कि उनसे जो बन पड़ता है वे करेंगे। सत्र में कुल मिलाकर बाईस प्रतिभागियों की सक्रिय भागीदारी से कार्यक्रम संपन्न हुआ। यह राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति की ओर एक महत्वपूर्ण कदम था।

नराकास कोच्ची ऑनलाइन कार्यशाला

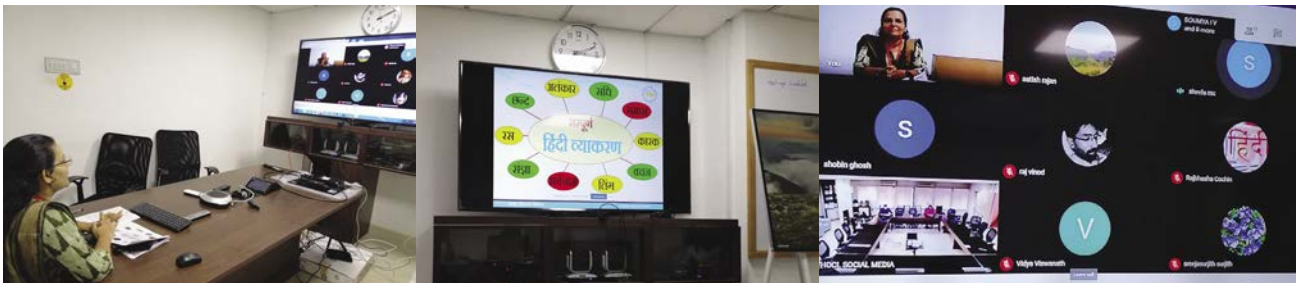

नराकास कोच्ची के तत्वावधान में एक दिवसीय ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला दिनांक 25.11.2020 (बुधवार) को सीएसएल के प्रायोजन में आयोजित किया गया। अलग-अलग कार्यालयों से कुल 25 कार्यपालकों व अधिकारियों ने कार्यशाला में सक्रिय रूप से भाग लिया। श्रीमती लिजा जी एस, हिंदी अनुवादक, कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड कार्यशाला की संकाय थी। कार्यशाला में मुख्य रूप से राजभाषा नीति, नियम, अधिनियम आदि से अवगत कराया गया।

राजभाषा वेबपेज

राजभाषा कार्यान्वयन से जुडी विविध कार्यकलापों को अधिक प्रसारित करने के उद्देश्य के साथ, कंपनी के वेबसाइट में "राजभाषा" से संबंधित एक वेबपेज का सृजन किया गया । इसमें मुख्य रूप से भारत सरकार की राजभाषा नीति, नियम, अधिनियम एवं वार्षिक कार्यक्रम तथा राजभाषा कार्यान्वयन के सिलसिले में समय-समय पर आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों,बोलचाल की हिंदी से जुडे प्रशिक्षण कार्यक्रम आदि की विस्तृत जानकारी शामिल की गई है । यह राजभाषा के संवर्धन हेतु एक महत्वपूर्ण कदम है ।

अनुभागों में डेस्क प्रशिक्षण

राजभाषा कार्यान्वयन समिति बैठक में लिए गए निर्णय के आधार पर जुलाई माह को डेस्क प्रशिक्षण की शरूआत की गई और सभी अनुभागों का डेस्क प्रशिक्षण संपन्न हुआ। डेस्क प्रशिक्षण के दौरान, फाइलों, रजिस्टरों में नामों एवं मुख्य दस्तावेज़ों का द्विभाषीकरण, कंप्यूटरों में यूनिकोड, फाइलों में हिंदी टिप्पणियां, पत्राचार आदि पर ज़ोर दिया जा रहा है।

विविध खबरें

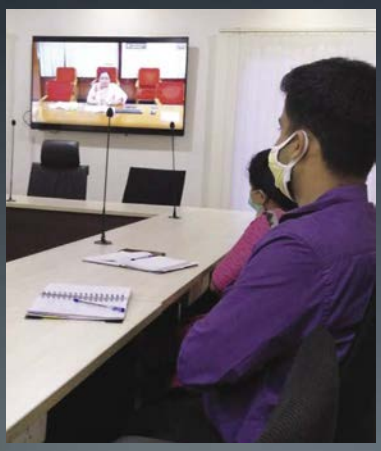

नराकास कोच्ची द्वारा ऑनलाइन मोड पर आयोजित राजभाषा अभिविन्यास कार्यक्रम में कार्यालय से कार्यपालक प्रशिक्षार्थी श्री श्रीनाथ बी और श्रीमती क्रिस्टीना सोसा एब्रहाम ने सक्रिय रूप से भाग लिया ।

बोलचाल की हिंदी

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में लिए गए निर्णय के आधार पर कार्यपालकों (अध्यक्ष व प्रबंधक निदेशक, निदेशक, महाप्रबंधक) के लिए ऑनलाइन बोलचाल हिंदी प्रशिक्षण की शुरूआत में पहला कदम उठाया गया जिसके लिए एक वॉट्स एप ग्रूप का सृजन किया गया जिसमें बोलचाल की हिंदी का मॉड्यूल अपलोड किया जा सके। इसके आधार पर 22 मॉड्यूल तैयार किए गए हैं और सप्ताह में एक दिन वीडियो अपलोड किया जाएगा । पहले बैच में 17 कार्यपालक गण का ग्रूप शामिल है । कार्यपालकों की सक्रिय भागीदारी से 22 मॉड्यूल के साथ कार्यक्रम पूरा किया गया ।

कंपनी समाचार

12 नवंबर 2020 सीएसएल केलिए एक ऐतिहासिक दिवस

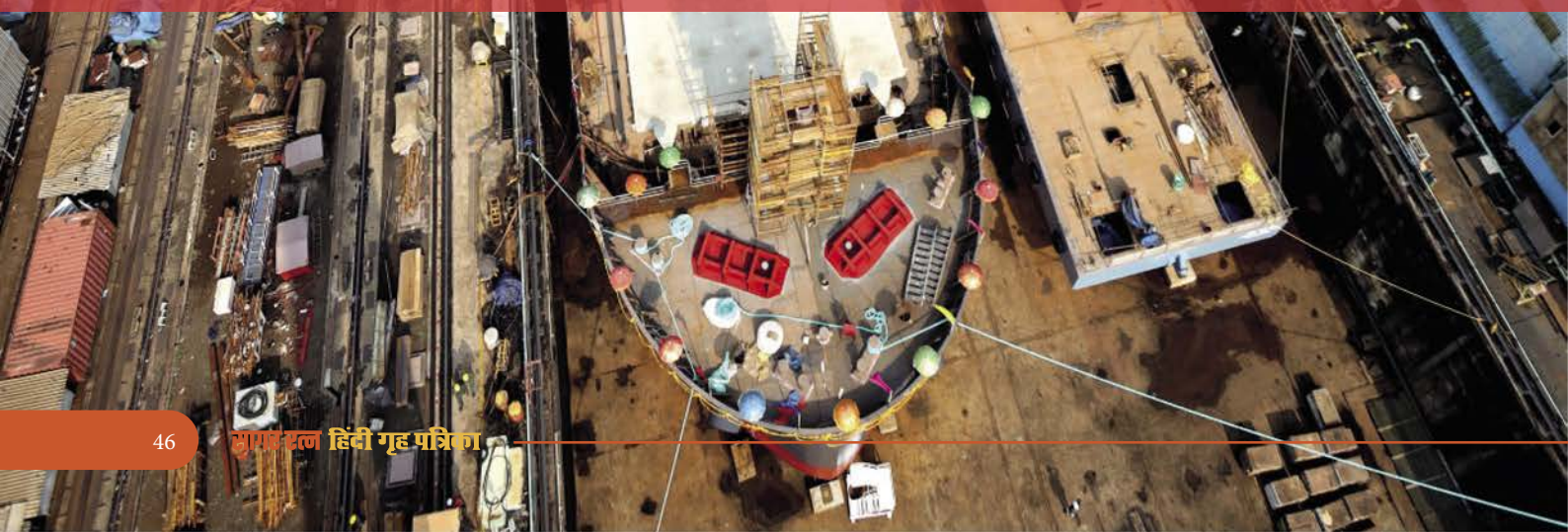

यह कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड (सीएसएल) का एक ऐतिहासिक दिन था जब शिपयार्ड ने कोच्ची में अपने निर्माण गोदी से एक बार में पांच जहाज़ों का जलावतरण किया और दो जहाज़ों केलिए कील भी डाला। पांच जहाज़ों का जलावतरण, श्री मधु एस नायर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, सीएसएल की सुपत्नी श्रीमती रमीता के, वैज्ञानिक 'जी , एनपीओएल (डीआरडीओ) के करकमलों से किया गया। श्री प्रणब के झा, वी पी जेएसडब्ल्यू शिप्पिंग और श्री मधु एस नायर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, सीएसएल ने दो नए जहाज़ों को कील डालने का कार्य किया। इस अवसर पर श्री सुरेष बाबु एन वी, निदेशक (प्रचालन), श्री बिजोय भास्कर, निदेशक (तकनीकी), श्री जोस वी जे, निदेशक (वित्त) और अन्य पदाधिकारियों ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति सुनिश्चित की।

जलावतरण किए गए जहाज़ों में जेएसडब्ल्यू शिप्पिंग एंड लॉजिस्टिक्स प्रा.लि. केलिए दो 8000 डीडब्ल्यूटी मिनी जनरल कार्गो शिप और भारतीय सीमा सुरक्षा बल केलिए तीन फ्लोटिंग बॉर्डर आउटपोस्ट जहाज़ (एफबीओपी) हैं। जेएसडब्ल्यू शिप्पिंग एंड लॉजिस्टिक्स प्राइवट लिमिटेड केलिए दो 8000 डीडब्ल्यूटी मिनी जनरल कार्गो शिप केलिए कील डालने का कार्य किया गया। सीएसएल ने आवश्यक सावधानियों के साथ उपलब्ध संसाधनों के साथ काम करके कोविड-19 महामारी के बीच यह उपलब्धि हासिल की थी।

मिनी जनरल कार्गो शिप

आज मिनी जनरल कार्गो जहाज़ों का जलावतरण और कील डाला गया, जो जेएसडब्ल्यू ग्रूप केलिए बनाए जा रहे चार समान जहाज़ों की एक श्रृंखला का हिस्सा है। इन जहाज़ों को इंडियन रजिस्टर ऑफ शिप्पिंग के मानकों के तहत बनाया और वर्गीकृत किया गया है। इन जहाज़ों का उपयोग कोयला, लौह अयस्क, डोलोमाइट और चूना पत्थर जैसे सूखे बल्क कार्गो के परिवहन केलिए किया जाएगा। 122 मीटर की लंबाई और 7.20 मीटर की ऊंचाई और 10 समुद्री मील की गतिवाले जहाज़ों में 16 चालक दल होंगे । इन जहाज़ों के जयगढ पत्तन और धर्मतार पत्तन के पास अंबा नदी में डोलवी स्टील प्लांट के बीच तटीय मार्ग पर चलने की उम्मीद है। यह कार्यक्रम, एक बार संचालित होने के बाद, भारत में सबसे बडे अंतर्देशीय जल परिवहन कार्गो संचलनों में से एक को सक्रिय करेगा, जो राष्ट्रीय जलमार्ग के विकास केलिए भारत सरकार के दृष्टिकोण के अनुरूप है ।

फ्लोटिंग बोर्डर आउटपोस्ट जहाज़

आज जलावतरण किए गए तीन एफबीओपी, जिनकी लंबाई 46 मीटर है, सीमा सुरक्षा बल के वाटर विंग केलिए बनाए जा रहे नौ जहाज़ों की एक श्रृंखला का हिस्सा है। इन जहाज़ों को सीएसएल द्वारा इन-हाउस डिज़ाइन किया गया है और इंडियन रजिस्टर ऑफ शिप्पिंग द्वारा वर्गीकृत किया गया है। प्रत्येक एफबीओपी को चार तेज गश्ती नौकाओं केलिए भंडारण व्यवस्था के साथ डिज़ाइन किया गया है, जिसे अपने स्वयं के डेविट सिस्टम का उपयोग करके जलावतरित और संचालित किया जा सकता है। जहाज़ तेज गश्ती नौकाओं के फ्लोटिला के लिए एक अस्थायी आधार के रूप में कार्य करेगा और छोटी नावों को पेट्रोल, ताजे पानी और प्रावधानों की आपूर्ति करेगा और जिसे भारत की पूर्वी और पश्चिमी सीमाओं पर परिनियोजित किया जाना है।

कंपनी समाचार

हम भविष्य के लिए तैयार

सीएसएल ने "ग्रीनको सिल्वर रेटिंग" के लिए भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) द्वारा प्रमाणित होने वाली नौवहन क्षेत्र की पहली कंपनी बनने का गौरव प्राप्त किया है। सीएसएल अब आईओसीएल, एचपीसीएल, बीपीसीएल, ओएनजीसी, गेल, भारतीय रेलवे (आईसीएफ में इकाइयां) जैसी कुछ बड़ी कंपनियों में शामिल हो गया है जिन्हें पहले ही प्रमाणित किया जा चुका है। इस प्रमाणन को "बहुत खास" माना जाता है, क्योंकि यह कोविड-19 महामारी के स्थिति में प्राप्त किया गया था और इसकी प्रक्रिया बहुत कम समय में पूरी की गई थी।

"ग्रीनको" रेटिंग एक कंपनी को प्रदान की जाती है जो अपनी उत्पादन गतिविधियों में "ग्रीन" पर्यावरण के अनुकूल पहलुओं के कार्यान्वयन में निर्धारित मानदंडों को पूरा करती है, संरक्षण करती है और सौर/पवन आदि जैसी हरित अक्षय ऊर्जा की ओर बढ़ने के लिए लगातार प्रयास कर रही है। यह पुरस्कार ऊर्जा दक्षता, जल संरक्षण, नवीकरणीय ऊर्जा, ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन, अपशिष्ट प्रबंधन, सामग्री संरक्षण, पुनर्चक्रण और पुनरावर्तन, हरित आपूर्ति श्रृंखला, उत्पाद प्रबंधन और जीवन चक्र मूल्यांकन, पर्यावरण, हरित बुनियादी ढांचे और पारिस्थितिकी के लिए नवाचार जैसे विभिन्न मापदंडों के तहत कंपनी के प्रदर्शन मूल्यांकन पर आधारित है।

सीएसएल ने शुरुआत में लेवल -3 सिल्वर रेटिंग हासिल कर ली थी, इसे कंपनी के लिए एक बड़ी उपलब्धि माना जाता है।

सीआईआई एचआईवीई वास्तविक मंच पर दिनांक 07 अक्तूबर 2020 को ग्रीनको सम्मेलन 2020 के 9वें संस्करण के दौरान सीआईआई ग्रीनको रेटिंग पुरस्कार समारोह (वास्तविक घटना) में सीएसएल को ग्रीनको रेटिंग प्रमाणपत्र प्रदान किया गया।

ग्रीनको सिल्वर रेटिंग विश्व स्तर की प्रतिस्पर्धात्मकता हासिल करने के सीएसएल के प्रयास को बढ़ावा देगी और लागत में कमी के नए अवसर प्रदान करेगी। कंपनी की निगमित ग्रीन छवि, विश्वसनीयता और हितधारकों के बीच पारदर्शिता भी पैदा करती है। ग्रीनको सिल्वर रेटिंग से सीएसएल के लिए पारिस्थितिक रूप से स्थायी व्यापार विकास के लिए एक मज़बूत दीर्घकालिक रोड़मैप तैयार करने का मार्ग प्रशस्त होने की भी उम्मीद है।

CII - Sohrabji Godrej Green Business Centre

hereby certifies that

Cochin Shipyard Limited

has successfully achieved the standards as required for the following level of certification under the GreenCo - Green Company Rating System which is valid for a period of 3 years

GreenCo Silver

Issue Date: 07-10-2020 Expiry Date: 06-10-2023

Jamshyd N Godrej, Chairman, CII-Godrej GBC
Pradeep Bhargava, Chairman, GreenCo Rating System
L S Ganapati, Chairman, GreenCo Assessor Panel
K S Venkatagiri, Executive Director, CII-Godrej GBC

सुरक्षा पुरस्कार

केरल सरकार के सामान्य शिक्षा और श्रम मंत्री श्री वी शिवनकुट्टी ने कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड को दिनांक 02 जुलाई 2021 को तिरुवनंतपुरम में महात्मा अय्यंकाली हॉल में आयोजित पुरस्कार समारोह में प्रतिष्ठित सुरक्षा पुरस्कार 2020 से सम्मानित किया । सुरक्षा पुरस्कार का गठन इंजीनियरिंग, ऑटोमोबाइल मरम्मत और सेवाई, कपड़ा और कयर के समक्ष बहुत बड़े कारखानों की श्रेणी के तहत कारखानों और बॉयलर विभाग, केरल सरकार द्वारा किया जाता है।

यह पुरस्कार सीएसएल में "फील सेफ" माहौल में सुधार के लिए अनुबंध कर्मचारी, प्रशिक्षार्थी, उप ठेकेदार और उप ठेकेदारों के कामगारों में प्रत्येक सीएसएल कर्मचारी की अथक भागीदारी, सहभागिता और योगदान की एक अतिरिक्त मान्यता है। *श्री सलीन ए, सहायक महाप्रबंधक (सुरक्षा) को भी समारोह में सर्वश्रेष्ठ सांविधिक सुरक्षा अधिकारी पुरस्कार 2020 से सम्मानित किया गया।* हम सभी प्रयासों में इस प्रोत्साहन को सीएसएल टीम के बीच जारी रखेंगे।

बोलचाल की भाषा

जब कई व्यक्ति-बोलियों में पारंपरिक संपर्क होता है, तब बोलचाल की भाषा का प्रसार होता है। दूसरे शब्दों में, आपस में मिलती-जुलती बोली या उपभाषाओं में हुए व्यवहार से बोलचाल की भाषा को विस्तार मिलता है।

बोलचाल हिंदी की विशेषताएँ

- बोलचाल हिंदी की सबसे बड़ी विशेषता है इसकी सहजता और सरलता।
- बोलचाल की भाषा बड़े पैमाने पर विस्तृत क्षेत्र में प्रयुक्त होती है।
- भक्तों द्वारा, साधु-संतों द्वारा, व्यापारियों के जरिए, तीर्थस्थानों में, मेला-महोत्सव में, रेल के डिब्बों में, सेना द्वारा, शिक्षितों में, मज़दूर और मालिक के बीच, किसान और ज़मीनदार के बीच बोलचाल की भाषा बड़ी तेजी से फैलने लगती है।
- यह प्रेम की, भाई-चारे की, इस मिट्टी की तथा हमारी संस्कृति की भाषा है।
- जन-जन तक फैलकर सबसे घुलमिल कर उसका एक मौखिक रूप सदा बरकरार रहता है, जो सरल, सहज, बोधगम्य और मधुर भी है।

मानक रूप में हिंदी भाषा का प्रयोग

1 “ये” का प्रयोग न करके “ए” का प्रयोग मानक माना गया है।
जैसे: लिए, गए, चाहिए, कीजिए आदि।

2 “यी” के स्थान पर “ई” का प्रयोग मानक होगा।
जैसे: गयी/गई, आयी/ आई, लायी/लाई आदि।

3 “ह” से पहले और बाद में यदि “अ” ध्वनि आए तो “ह” का उच्चारण “ए” के रूप में होता है।
जैसे- शहर, महल, बहन, कहना, रहना आदि।

4 हिंदी के शब्द में आनेवाले बिंदी का उच्चारण, बिंदी के बाद आनेवाले अक्षर वर्ग के पाँचवां अक्षर का उच्चारण माना जाएगा।

जैसे- गंगा - क ख ग घ **ङ**
अंचल - च छ ज झ **ञ**
दंड - ट ठ ड ढ **ण**
धंधा - त थ द ध **न**

5 वकारांत ध्वनि का प्रयोग हिंदी में समाप्त हो गया है, अत: उनका प्रयोग न किया जाए।

जैसे - हुवा - हुआ
गुरुवों - गुरुओं
कौवा - कौआ

सामान्य वार्तालाप

क्र.सं.	हिंदी वाक्यांश	अंग्रेज़ी वाक्यांश
1.	इस गलती केलिए मैं जिम्मेदार हूँ ।	I am responsible for this mistake.
2.	मैं उसे अच्छे से जानता हूँ ।	I know him well.
3.	क्या हुआ । तुम परेशान दिख रहे हो ।	What's wrong? You look upset.
4.	इससे कोई फर्क नहीं पड़ता ।	It doesn't matter.
5.	हार मत मानो ।	Don't give up.
6.	क्या आपको यकीन है ?	Are you sure ?
7.	मुझे पता नहीं है ।	I have no idea.
8.	चलो, चलते हैं ।	Let's go.
9.	यह कितने का है ?	How much is it?
10.	आपसे मिलकर अच्छा लगा ।	Nice to meet to you.
11.	क्या आप मेरे साथ आ रहे हैं ?	Are you coming with me ?
12.	मेरा इंतज़ार करना ।	Wait for me.
13.	अंदर आइए ।	Come in.
14.	मैं भूल गया ।	I forgot.
15.	मैं बहुत व्यस्त हूँ ।	I am very busy.
16.	यह मेरी गलती नहीं है ।	It's not my fault.
17.	आप क्या ढूँढ रहे हो ?	What are you looking for ?
18.	क्या तुम कॉफी लोगे ?	Will you have some coffee?
19.	कृपया इसे जल्दी करें ।	Please do it quickly.
20.	मुझे बताओ क्या हुआ ।	Tell me what happened ?
21.	क्या कोई खास बात है ?	Is there anything special ?
22.	आपने क्या कहा ?	What did you say ?
23.	तुम कहां जा रहे हो ?	Where are you going ?
24.	कृपया बुरा मत मानना ।	Please don't mind.
25.	कृपया आप दोहरा सकते हैं ?	Can you please repeat that ?

बाल रचनाएं

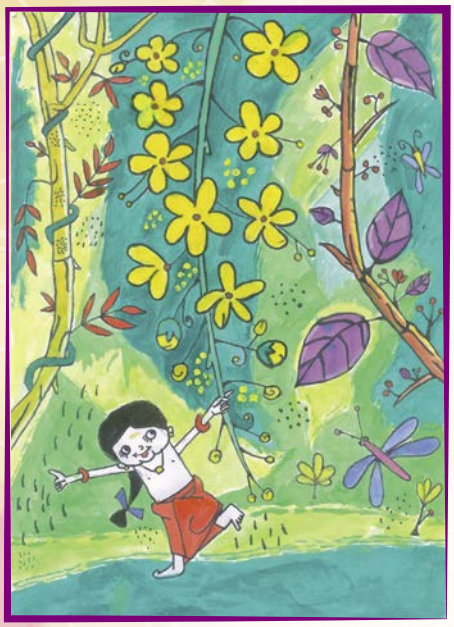

देवना
किरण टी राज
की सुपुत्री

फातिमथु सुहरा,
युसफ ए के की सुपुत्री

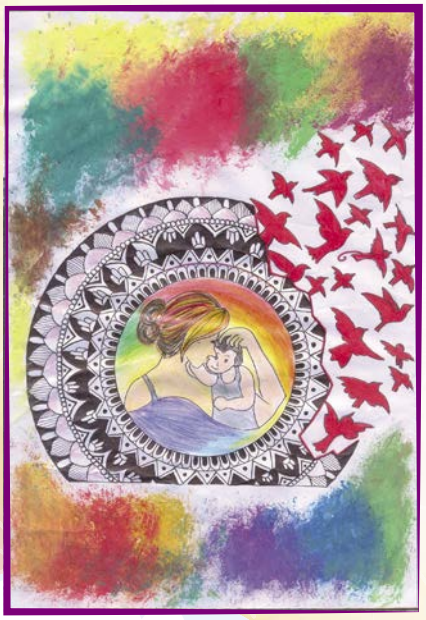

आरती एम बाबु
आशा टी एन की सुपुत्री

इवान टिलसन
टिलसन थॉमस का सुपुत्र

बाल रचनाएं

नेहा के बी
सरिता जी की सुपुत्री

गौरीशंकर
आतिरा आर एस
का सुपुत्र

वैष्णवी रमेश
रमेश पी एस की सुपुत्री

अमिता विजित
हृष्णा पी एम की सुपुत्री

डॉन सारा बिनु
बिनु कुरियाकोस की सुपुत्री

बाल रचनाएं

ऐंजलीना जॉय
अलीना नीतु साबिन की सुपुत्री

सर्वेश्वर एस
सुजीत एस का सुपुत्र

ईश्या विनोद
कीर्ति आर की सुपुत्री

निव्या के बी
सरिता जी की सुपुत्री

अमेया
टिलसन थॉमस की सुपुत्री

स्वास्थ्य एवं परिवार
कल्याण मंत्रालय
भारत सरकार

बचें और बचाएं

कोविड-19 का टीका सुरक्षित है

टीकाकरण के लिए ध्यान रखें

जांच के लिए पंजीकरण के समय प्रयोग की गई फोटो आई डी लेकर जाएं।

टीका लगने के बाद निर्धारित क्षेत्र में 30 मिनट रुकें।

पूरी सुरक्षा के लिए दूसरा टीका निर्धारित दिन पर लगवाएं।

टीके के बाद भी जारी रहे पांच व्यवहार, कोरोना से हो सबका बचाव

मास्क सही से पहनें

हाथों को नियमित रूप से साबुन व पानी से धोएं या सैनिटाइज़र का प्रयोग करें

आपस में 2 गज की दूरी बनाएं

लक्षण दिखने पर तुरंत खुद को दूसरों से अलग रखें

लक्षण दिखने पर तुरंत परीक्षण करवाएं

टीकाकरण करवाने के लिए पंजीकरण अनिवार्य है।

24/7 हेल्पलाइन नंबर: 1075 (टोल फ्री)

हम सुरक्षित, तो देश सुरक्षित!